

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِبَدْرٍ وَأَنْتُمْ أَذِلَّةٌ

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

Postal Reg. No. GDP -45/2026-2028

06 शवाल 1447 हिज्री कमरी, 26- अमान 1405 हिज्री शम्सी, 26 मार्च 2026 ई.

संपादक
शेख मुजाहिद अहमद
उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

वर्ष- 11
अंक - 13

अल्लाह तआला का आदेश

وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ آزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّاتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا أُولَئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوا وَيُلَقَّوْنَ فِيهَا مِنْ حَسَنَاتٍ أُولَئِكَ فِيهَا مُتَقَرَّرُونَ وَمَقَامًا قُلُومًا
يَعْبُؤْا بِكُمْ رَبِّي لَوْلَا دُعَاؤُكُمْ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُونُ لِزَامًا (الفرقان: 75-78)

अनुवाद : और वे लोग जो यह कहते हैं कि ऐ हमारे रब! हमें अपने जीवन-साथियों और अपनी संतान से आँखों की ठंडक प्रदान कर और हमें धर्मपरायण लोगों का अगुआ बना दे। यही वे लोग हैं जिन्हें इस कारण कि उन्होंने धैर्य रखा, ऊँचे स्थान (महलों) पुरस्कार के रूप में दिए जाएंगे, और वहाँ उनका स्वागत किया जाएगा तथा उन्हें सलाम (शांति) कहा जाएगा। वे हमेशा उन (जन्नतों) में रहने वाले होंगे। वे कितने ही अच्छे हैं अस्थायी ठिकाने के रूप में भी और स्थायी ठिकाने के रूप में भी। तू कह दे कि यदि तुम्हारी प्रार्थना न होती तो मेरा रब तुम्हारी कोई परवाह न करता। फिर तुम उसे झूठला चुके हो, अतः अवश्य ही उसका परिणाम (दंड) तुमसे चिपक जाने वाला है।

خَيْرُكُمْ خَيْرٌكُمْ لِأَهْلِهِ وَأَتْأَخِيرُكُمْ لِأَهْلِي

तुम में से सबसे अच्छा वह व्यक्ति है जिसका अपने परिवार के साथ व्यवहार अच्छा हो। और मैं तुम में सबसे अधिक अपने परिवार के साथ अच्छा व्यवहार करने वाला हूँ।

(इब्र माजा / किताबुन्निकाह, बाब: स्त्रियों के साथ उत्तम व्यवहार)

أَمَّا الدُّنْيَا مَتَاعٌ وَلَيْسَ مِنْ مَتَاعِ الدُّنْيَا شَيْءٌ أَفْضَلُ مِنَ الْمَرْأَةِ الصَّالِحَةِ

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि दुनिया तो जीवन का सामान है और नेक स्त्री से बढ़कर कोई भी जीवन का सामान नहीं है।

(इब्र माजा, अबवाबुन्निकाह, बाब: उत्तम स्त्रियाँ)

चाहिए कि पत्नियों के साथ पतियों का ऐसा संबंध हो जैसे दो सच्चे और वास्तविक मित्रों का होता है!
मनुष्य के उत्तम आचरण और खुदा तआला से उसके संबंध की पहली गवाह तो यही स्त्रियाँ होती हैं!

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

“चाहिए कि पत्नियों के साथ पतियों का ऐसा संबंध हो जैसे दो सच्चे और वास्तविक मित्रों का होता है। मनुष्य के उत्तम आचरण और खुदा तआला से संबंध की पहली गवाह तो यही स्त्रियाँ होती हैं। यदि इन्हीं के साथ उनके संबंध अच्छे नहीं हैं तो फिर किस प्रकार संभव है कि खुदा तआला से मेल हो। रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है: ख़ैरकुम ख़ैरकुम लिअह्लिही — तुममें से अच्छा वह है जो अपने घरवालों के लिए अच्छा हो।”

(मलफूज़ात, भाग तृतीय / अल-बद्र, 22 मई 1903)

“जो व्यक्ति अपनी पत्नी और उसके संबंधियों से (अर्थात् उसके रिश्तेदारों से भी) नरमी और भलाई के साथ व्यवहार नहीं करता, वह मेरी जमाअत में से नहीं है।”

(कश्ती-ए-नूह, रूहानी ख़ज़ाइन, भाग 19, पृष्ठ 19)

“अल्लाह तआला ने कुरआन शरीफ़ में यह दुआ सिखाई है कि: अस्लिह ली फी ज़ुरिय्यती — कि मेरी पत्नी और बच्चों की सुधार कर। अपनी अवस्था की पवित्र परिवर्तन और दुआओं के साथ-साथ अपनी संतान और पत्नी के लिए भी दुआ करते रहना चाहिए। क्योंकि अक्सर फितने संतान की वजह से मनुष्य पर आ जाते हैं और अक्सर पत्नी की वजह से। संक्षेप में, इनके कारण भी मनुष्य पर कठिनाइयाँ और मुसीबतें आ जाती हैं, इसलिए इनके सुधार की ओर भी पूरा ध्यान देना चाहिए और इनके लिए भी दुआएं करते रहना चाहिए।”

(मलफूज़ात, भाग पंचम, पृष्ठ 2, 457-456 मार्च 1908)

तफ़सीर-ए-कबीर से अंश

खुदा तआला ने इस आयत में बताया है कि मोमिन छोटी-छोटी बातों पर संतुष्ट नहीं होता, बल्कि वह नेता और इमाम बनने की दुआ करता है।

सैयदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु
وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ آزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّاتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا

(सूरह अल-फुरकान, आयत 75)

(अनुवाद: और वे लोग जो यह कहते हैं कि ऐ हमारे रब!

हमें अपनी जीवन-साथिनियों और अपनी संतान से आँखों की ठंडक प्रदान कर और हमें मुत्तकियों का इमाम बना दे)

की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

“रहमान के बंदों की एक यह भी पहचान है कि वे दुआ करते रहते हैं कि ऐ हमारे रब! हमें अपनी पत्नियों और अपनी संतान की ओर से आँखों की ठंडक प्रदान कर और हमें मुत्तकियों का इमाम बना। अफसोस है कि मुसलमानों ने अपने शासनकाल में इस दुआ को भी नजरअंदाज कर दिया और वे अपनी आने वाली पीढ़ियों की परवरिश से गाफिल हो गए। इसका परिणाम यह हुआ कि एक-एक करके उनकी सभी हुकूमतें उनके हाथ से निकल गई और गैरों ने उनके देशों पर कब्ज़ा कर लिया।

यदि मुसलमान अपने शासनकाल में उन उच्च नैतिक गुणों पर कायम रहते जिनका इस सूरह में उल्लेख किया गया है और वे दिन-रात खुदा तआला से यह दुआ करते रहते कि ऐ खुदा! हमें ऐसी संतान दे जो हमारी आँखों के लिए ठंडक का कारण बने,

और वे अपनी आने वाली पीढ़ियों की अच्छी परवरिश से कभी गाफिल न होते, तो वे अयोग्य शासक उम्मत-ए-मुहम्मदिया सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में क्यों पैदा होते, जिन्होंने सिंहासन और ताज को अपनी ऐशपरस्ती की भेंट चढ़ा दिया, और वे हुकूमतें जो उनके पूर्वजों ने बड़ी-बड़ी कुर्बानियों के बाद प्राप्त की थीं, उन्हें अपनी बुरे आचरण से नष्ट कर दिया।

यह पतन मुसलमानों पर इसलिए आया कि वे ‘इबादुर्रहमान’ के कर्तव्यों को भूलते चले गए, और जब उन्होंने खुदा तआला को भुला दिया तो खुदा ने भी उन्हें भुला दिया और उन्हें ताज और सिंहासन से वंचित कर दिया। निस्संदेह यह जो कुछ हुआ अत्यंत दुःखद है, लेकिन यदि अब भी मुसलमान भविष्य के लिए शिक्षा लें, अपनी आने वाली पीढ़ियों की परवरिश की ओर ध्यान दें और खुदा तआला से दुआ करते रहें कि वह उनकी जिंदगी में भी और उनके मरने के बाद भी उनकी संतानों को नेकी पर कायम रखे और उनका अस्तित्व हमेशा उनके लिए आँखों की ठंडक का कारण बना रहे, तो अब भी वे अपनी खोई हुई संपत्ति को फिर से प्राप्त कर सकते हैं।

अतः उन्हें अपने हौसले ऊंचे करने चाहिए और निराशा को अपने पास भी नहीं आने देना चाहिए, क्योंकि खुदा तआला ने इस आयत में बताया है कि मोमिन छोटी-छोटी बातों पर संतुष्ट नहीं होता, बल्कि वह नेता और इमाम बनने की दुआ

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनसिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

करता है। लेकिन किसका इमाम? मुत्तकियों का इमाम, गैर-मुत्तकियों का नहीं।

संभव है कुछ लोगों के मन में यह विचार आए कि हर व्यक्ति कैसे नेता और इमाम बन सकता है। इसलिए उन्हें याद रखना चाहिए कि यदि पुरुष यह प्रयास करे कि उसकी पत्नी धर्म से परिचित हो, नमाज़-रोज़े की पाबंद हो,

शेष 11 पर

औलाद की तरबियत और रमज़ान — तक्रवा की व्यावहारिक बुनियाद

मानव जीवन अपनी वास्तविकता के अनुसार बहुत ही छोटा और अस्थायी है। कुरआन-ए-करीम इस सत्य को बड़े संक्षिप्त और प्रभावशाली ढंग से बयान करता है:

كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ (आल-इमरान: 186)

अर्थात् हर प्राणी को मृत्यु का स्वाद चखना है। यह आयत हमें इस सच्चाई की ओर ध्यान दिलाती है कि दुनिया की ज़िंदगी पानी के बुलबुले की तरह है। कोई भी इंसान इस दुनिया में हमेशा रहने के लिए नहीं आया। उसे एक न एक दिन अपने सच्चे सृष्टिकर्ता के सामने उपस्थित होना ही है। यही वह मूल विचार है जिसके आधार पर एक मुसलमान अपनी ज़िंदगी के हर काम को अर्थपूर्ण बनाने की कोशिश करता है और अपनी आखिरत की तैयारी करता है, और इसी प्रकार अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए भी चिंतित रहता है।

अल्लाह तआला ने इंसान की प्रकृति में यह भावना रखी है कि वह अपनी औलाद को दीन और दुनिया दोनों के लिहाज़ से सफल बनाने के लिए हर संभव प्रयास करे। यही कारण है कि हर व्यक्ति अपनी क्षमता और ज्ञान के अनुसार अपनी संतानों की परवरिश करता है। एक विद्वान अपनी औलाद को ज्ञान सिखाता है, एक व्यापारी उन्हें व्यापार के सिद्धांत समझाता है, एक डॉक्टर या वैद्य अपनी विशेषज्ञता या अपने नुस्खे उन्हें सिखाने की कोशिश करता है। इन सभी प्रयासों का एक उद्देश्य यह होता है कि उसकी औलाद न केवल उसके स्थापित कार्य को बनाए रखे, बल्कि उसे आगे बढ़ाए।

लेकिन एक मुसलमान के लिए इससे भी अधिक एक महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है, और वह है अपनी औलाद को दीन की शिक्षा देना, उनमें खुदा तआला की मुहब्बत पैदा करना और तक्रवा की भावना को जागृत करना। यही वह पूंजी है जो इंसान के बाद भी उसके लिए निरंतर पुण्य (सदका जारीया) बनती है और उसकी स्थायी सफलता का कारण बनती है।

रसूलुल्ला सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि इंसान के मरने के बाद उसके कर्म बंद हो जाते हैं, सिवाय कुछ बातों के, जिनमें से एक वह नेकियाँ हैं जो उसकी औलाद में जारी रहती हैं। इससे स्पष्ट होता है कि औलाद की सही परवरिश न केवल दुनियावी लाभ देती है, बल्कि आखिरत में भी इंसान के लिए रहमत का कारण बनती है।

रमज़ान मुबारक इस परवरिश के लिए एक बहुत ही उपयुक्त और बरकत वाला महीना है। यह वह समय होता है जब एक मुसलमान स्वयं भी इबादत, रोज़ा, नमाज़ और कुरआन की तिलावत में लगा रहता है और उसका दिल चाहता है कि उसकी औलाद भी इन नेकियों में शामिल हो। इस माहौल में बच्चों के दिलों में भी इबादत का शौक पैदा होता है और वे अपने माता-पिता की देखा-देखी रोज़ा रखने और नमाज़ पढ़ने की इच्छा जताते हैं।

हालांकि यहाँ एक महत्वपूर्ण प्रश्न उत्पन्न होता है कि बच्चों को रोज़े की आदत किस उम्र से डालनी चाहिए? क्या छोटे बच्चों को भी रोज़ा रखने के लिए मजबूर करना चाहिए या इसमें धीरे-धीरे आगे बढ़ना चाहिए? देखा गया है कि कुछ लोग इसमें अति करते हुए बहुत छोटे बच्चों से ज़बरदस्ती रोज़ा रखवाते हैं, जबकि कुछ लोग लापरवाही करते हुए अपने बालिग बच्चों को भी रोज़ा रखने की शिक्षा नहीं देते। कुरआन-ए-करीम हमें सामान्य सिद्धांत सिखाता है कि उपदेश और प्रशिक्षण का कार्य निरंतर चलता रहना चाहिए:

وَذَكِّرْ فَإِنَّ الذِّكْرَ تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِينَ (अज़-ज़ारियात: 56)

अतः उपदेश करते रहो, क्योंकि उपदेश निश्चित रूप से ईमान वालों को लाभ देता है।

इसी सिद्धांत के प्रकाश में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने बच्चों के रोज़ों के बारे में बहुत ही बुद्धिमत्तापूर्ण मार्गदर्शन दिया है। आप रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं:

“फिर कुछ लोग छोटे बच्चों से भी रोज़ा रखवाते हैं, जबकि हर एक आदेश और नियम के लिए अलग-अलग सीमाएँ और अलग-अलग समय होते हैं। मेरे विचार में कुछ आदेशों का समय चार वर्ष की आयु से शुरू होता है, कुछ ऐसे हैं जिनका समय सात से बारह वर्ष तक है और कुछ ऐसे हैं जिनका समय पंद्रह या अठारह वर्ष की आयु से शुरू होता है। मेरे विचार में रोज़ों का आदेश पंद्रह से अठारह वर्ष की आयु के बच्चे पर लागू होता है और यही बालिग होने की सीमा है।

मेरे विचार में इससे पहले बच्चों से रोज़ा रखवाना उनके स्वास्थ्य पर बहुत बुरा प्रभाव डालता है, क्योंकि वह समय उनके लिए ऐसा होता है जिसमें वे शक्ति और बल

प्राप्त कर रहे होते हैं। इसलिए जिस समय वे शक्ति इकट्ठा कर रहे होते हैं, उस समय उनकी शक्ति को दबाना और बढ़ने न देना उनके लिए बहुत हानिकारक है। देखो, तेल के इंजन या दूसरे इंजनों में अतिरिक्त भाप निकाली जाती है, लेकिन यह कभी नहीं किया जाता कि जब भाप तैयार हो रही हो और पर्याप्त मात्रा तक न पहुँची हो, उसी समय निकाल दी जाए। नदी को बाँधकर नहर के माध्यम से पानी का रुख तब बदला जाता है जब नदी में पानी अधिक हो। लेकिन यदि नदी में पर्याप्त पानी न हो तो उससे पानी नहीं निकाला जाता। इसलिए जिस समय बच्चा शक्ति प्राप्त कर रहा हो, उस समय उसे रोज़ा नहीं रखवाना चाहिए, जब तक कि उसकी आयु पंद्रह वर्ष न हो जाए, क्योंकि उससे पहले बच्चे पर रोज़ा अनिवार्य नहीं होता। इसलिए न केवल यह कि उस उम्र में बच्चों से रोज़ा न रखवाएँ, बल्कि प्रयास करना चाहिए कि वे रोज़ा न रखें, क्योंकि बच्चों को स्वयं भी शौक होता है कि वे रोज़ा रखें।”

हुज़ूर रज़ियल्लाहु अन्हु आगे फ़रमाते हैं:

“बारह वर्ष से कम आयु के बच्चे से रोज़ा रखवाना मेरे विचार में अपराध है और बारह से पंद्रह वर्ष की आयु के बच्चे को यदि कोई रोज़ा रखवाता है तो वह गलती करता है। पंद्रह वर्ष की आयु से रोज़ा रखने की आदत डालनी चाहिए और अठारह वर्ष की आयु में रोज़े अनिवार्य समझे जाने चाहिए... इस प्रकार धीरे-धीरे उन्हें उस समय रोज़े का आदी बनाया जाए।”

(खुल्बात-ए-महमूद, जिल्द 9, पृष्ठ 88-89, खुल्बा जुम्आ, 3 अप्रैल 1925)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु का यह कथन इस्लाम की उस सुंदर शिक्षा को स्पष्ट करता है कि इबादतों में भी संतुलन, बुद्धिमत्ता और क्रमबद्धता को ध्यान में रखा जाता है। इस्लाम न तो अनावश्यक कठोरता की शिक्षा देता है और न ही लापरवाही की अनुमति देता है, बल्कि हर कार्य को उसके उचित समय और स्थिति के अनुसार करने की शिक्षा देता है।

इसी प्रकार कुरआन-ए-करीम बीमारी के मामले में भी स्पष्ट छूट देता है, लेकिन साथ ही इंसान की स्वाभाविक कमजोरी और बहानेबाज़ी की ओर भी संकेत करता है:

إِنَّ الْإِنْسَانَ خُلِقَ هَلُوعًا (अल-मआरिज: 20)

अर्थात् निश्चय ही मनुष्य अधीर और कमजोर पैदा किया गया है।

इसी पहलू की बहुत सुंदर व्याख्या हज़रत खलीफ़तुल मसीह खामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ ने की। हुज़ूर अनवर फ़रमाते हैं:

“कुरआन-ए-करीम की स्पष्ट शिक्षा है कि यदि बीमार हो तो रोज़ा न रखो। केवल इस संभावना पर कि बीमार हो जाएंगे, रोज़ा छोड़ना गलत है... हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं... बहुत से लोग बहाने बनाने वाले होते हैं... खुदा तआला उसकी नीयत और इरादे को जानता है... जो सच्चाई और निष्ठा रखता है, उसके साथ अल्लाह तआला वैसा ही व्यवहार करता है, लेकिन जो बहाना बनाने वाला होता है, उसके साथ उसी के अनुसार व्यवहार होता है।”

(खुल्बा जुम्आ, 24 अप्रैल 2020)

यह शिक्षा हमें एक संतुलित दृष्टिकोण प्रदान करती है। एक ओर इस्लाम बीमारी और कमजोरी की स्थिति में छूट देता है, और दूसरी ओर यह भी सिखाता है कि हम अपनी कमजोरी को बहाना न बनाएँ, बल्कि सच्चे दिल से इबादत करें।

अतः रमज़ान मुबारक केवल रोज़ा रखने का नाम नहीं है, बल्कि यह एक संपूर्ण प्रशिक्षण प्रणाली है जिसमें इंसान अपने मन का सुधार करता है, अपनी इबादतों को बेहतर बनाता है और अपनी औलाद को भी इस नेक रास्ते पर चलाता है। माता-पिता की ज़िम्मेदारी है कि वे बहुत समझदारी, प्रेम और क्रमबद्धता के साथ अपने बच्चों में दीन की मुहब्बत पैदा करें, न कि कठोरता और ज़बरदस्ती के माध्यम से।

संक्षेप में, यद्यपि इंसान इस दुनिया में हमेशा के लिए नहीं आया, बल्कि थोड़े समय के बाद उसे वापस जाना है, लेकिन वह इस छोटी सी ज़िंदगी को स्थायी बना सकता है यदि वह अपनी औलाद की ऐसी परवरिश करे जो तक्रवा, इबादत और खुदा तआला की मुहब्बत पर आधारित हो।

रमज़ान मुबारक हमें यह सुनहरा अवसर प्रदान करता है कि हम न केवल अपना सुधार करें, बल्कि अपनी आने वाली पीढ़ियों को भी नेकी के रास्तों पर चलाकर जाएँ।

खुतबः जुमअः

हमें थकने से क्या संबंध? हम तो खुदा तआला से दुआएँ करते थे। मांगने वाला भी कभी थकता है क्या? जो मांगने से थक जाता है, वह पीछे रह जाता है। हम मांगने वाले और वह देने वाला फिर थकान कैसी? जिस से थोड़ी सी भी आशा होती है, वहाँ मांगने वाला डटा रहता है, और खुदा तआला के दरबार में तो सारी आशाएँ मौजूद हैं। वह देने वाला है, बहुत देने वाला है, अत्यंत कृपालु है, दयावान है और फिर मालिक है और अत्यंत शक्तिशाली भी है।

(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आदर्श पर सबसे अधिक चलने के दृश्य हमें इस युग में आपके सच्चे अनुयायी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम में दिखाई देते हैं।

आप की आदत थी कि रात को ईशा के बाद जल्दी सो जाते थे और फिर लगभग एक बजे तहज्जुद के लिए उठ जाते थे। तहज्जुद पढ़ने के बाद कुरआन-ए-करीम की तिलावत करते रहते थे।

फिर जब सुबह की अज़ान होती तो सुन्नत नमाज़ घर में पढ़कर नमाज़ के लिए मस्जिद जाते और जमाअत के साथ नमाज़ अदा करते।

आप को कुरआन-ए-करीम और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सुन्नत से अत्यंत प्रेम था और आपकी सारी इबादतें कुरआन और सुन्नत की सीमा से कभी बाहर नहीं जाती थीं।

नमाज़ के अलावा आपका नियमित कार्य कुरआन शरीफ़ की तिलावत, दरूद शरीफ़ और अस्तग़फ़ार था। कुरआन शरीफ़ से तो आपको विशेष प्रेम था। आप दिन-रात, उठते-बैठते और टहलते हुए भी उसे पढ़ते रहते थे और अत्यंत रोते थे।

जब भूकंप शुरू हुआ तो आप अपने पूरे परिवार और बच्चों के साथ खुदा तआला के सामने दुआ में लग गए और अपने रब के सामने सजदे में झुक गए।

बहुत देर तक खड़े रहकर, रूकू और सजदे में पूरा परिवार, सेवकों सहित, गिरा रहा और खुदा तआला की महानता के सामने कांपता और डरता रहा।

(रिवायत हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु)

नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ने का एक तरीका यह भी है कि पत्नी और बच्चों को साथ लेकर घर में ही जमाअत के साथ नमाज़ अदा कर ली जाए।

(हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु)

आज भी जहाँ-जहाँ कमियाँ हैं, वहाँ लोगों को ध्यान रखना चाहिए। घरों में बच्चों के साथ नमाज़ पढ़ें, इससे बच्चों को भी नमाज़ की आदत पड़ जाएगी।

दुनिया से आपकी रुचि बिल्कुल कम हो गई थी और जब आप बहुत छोटे थे, तब भी आपकी सारी इच्छाएँ खुदा तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने में ही लगी रहती थीं।

(हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु)

जिन दिनों लोगों का आना-जाना कम था, आप बड़ी इच्छा व्यक्त करते थे कि काश! अपनी ही एक जमाअत हो, जिसके साथ मिलकर पाँचों वक्त की नमाज़ पढ़ा करें। और आप कहते थे कि मैं दुआ में लगा हुआ हूँ और आशा है कि खुदा तआला मेरी दुआ स्वीकार करेगा... आज खुदा तआला के फ़ज़ल से नमाज़ियों की संख्या अस्सी-नब्बे होती है।

(रिवायत हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु)

अब तो खुदा तआला के फ़ज़ल से हर देश में हमारी मस्जिदें भी हैं, इसलिए हमें प्रयास करना चाहिए कि अपनी मस्जिदों को पाँचों वक्त आबाद रखें और कोशिश करके हर नमाज़ जमाअत के साथ अदा करें।

हज़रत साहिबजिस तरह नमाज़ पढ़ा करते थे, वह तरीका मुझे आता है। अर्थात हर नमाज़ अत्यंत भावुकता के साथ पढ़ते थे।

नम्रता, विनम्रता और विनय के साथ अदा करते थे, जैसे कोई बच्चा अपने माता-पिता के सामने रोकर कुछ माँगता है। ऐसी नमाज़ का हम नमाज़ियों के दिलों पर बहुत प्रभाव पड़ता था।

(रिवायत हज़रत अब्दुस्सत्तार साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सच्चे अनुयायी

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इबादत का ईमान बढ़ाने वाला वर्णन

श्रीमती अमतुल शरीफ़ साहिबा, पत्नी महमूद अहमद बट साहिब, डेरीयाँ वाला नारोवाल, और श्रीमान शेख़ बशीर अहमद साहिब, लाहौर—
इनका सद्भावना से उल्लेख और नमाज़ जनाज़ा गायब।

खुतबः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्जा मसरूर अहमद खलीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनसिहिल अज़ीज़,

दिनांक 13 फ़रवरी 2026 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिरि (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ. بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ. الْحَمْدُ لِلَّهِ
رَبِّ الْعَالَمِينَ. الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ. مَلِكِ يَوْمِ الدِّينِ. إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ.
إِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ. صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّالِّينَ

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आदर्श पर सबसे अधिक चलने के दृश्य हमें इस युग में आपके सच्चे अनुयायी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम में दिखाई देते हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इबादत और इस संबंध में आपके द्वारा अपने मानने वालों को दी गई नसीहतें, इबादत करने के तरीके और खुदा तआला का ज़िक्र करने के तरीकों के घटनाक्रम पिछले खुतबों में बयान किए जा चुके हैं।

आज मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के वे घटनाक्रम बयान करूँगा जो आपने अपने आका आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पालन करते हुए किए और जो हम तक पहुँचे हैं।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि मिर्ज़ा मुहम्मद दीन साहिब, निवासी लंगरवाल, ज़िला गुरदासपुर ने उन्हें लिखकर भेजा कि “मैं अपने बचपन से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को देखता आया हूँ और सबसे पहले मैंने आपको मिर्ज़ा गुलाम मुर्तज़ा साहिब के जीवनकाल में देखा था, जबकि मैं बिल्कुल छोटा बच्चा था।

आप की आदत थी कि रात को ईशा के बाद जल्दी सो जाते थे और फिर लगभग एक बजे तहज़ुद के लिए उठ खड़े होते थे। तहज़ुद पढ़ने के बाद कुरआन-ए-करीम की तिलावत करते रहते थे। फिर जब सुबह की अज़ान होती तो सुन्नत नमाज़ घर में पढ़कर नमाज़ के लिए मस्जिद जाते और जमाअत के साथ नमाज़ अदा करते। कभी आप स्वयं नमाज़ पढ़ाते और कभी मियाँ जान मुहम्मद, जो

मस्जिद के इमाम थे, नमाज़ पढ़ाते। नमाज़ के बाद आप कुछ देर के लिए विश्राम कर लेते थे। मैंने आपको मस्जिद में सुन्नत नमाज़ पढ़ते नहीं देखा। आप सुन्नतें घर पर ही पढ़ते थे।”

(उद्धारित: सीरतुल महदी, जिल्द 1, हिस्सा 3, पृष्ठ 513-514, रिवायत 491)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी इबादत के बारे में बयान करते हैं कि खुदा तआला ने आपको किस प्रकार इबादत करने की शक्ति दी। लेकिन आपने यह भी फ़रमाया कि यह हर व्यक्ति के लिए नहीं है कि वह उसी तरह करे या अपनी क्षमता से अधिक करे, क्योंकि आपने फ़रमाया कि मुझे खुदा तआला ने विशेष शक्ति दी है।

फिर आपने अपनी स्थिति का वर्णन इस प्रकार किया:

“मैंने कभी कठिन तपस्याएँ नहीं कीं और न ही वर्तमान समय के कुछ सूफियों की तरह कठोर साधनाओं में अपने आप को डाला और न ही एकांतवास करके कोई चिल्ला-कशी की और न ही सुन्नत के विरुद्ध कोई संन्यास जैसा कार्य किया जिस पर खुदा तआला के कलाम को आपत्ति हो। बल्कि मैं हमेशा ऐसे फकीरों और नवाचार करने वालों से दूर रहा जो तरह-तरह की बिदअतों में पड़े हुए हैं।”

फिर आप फ़रमाते हैं:

“हाँ, मेरे पिता के समय में, जब उनके देहांत का समय निकट था, एक बार ऐसा हुआ कि एक बुज़ुर्ग, पविल चेहरे वाले व्यक्ति मुझे स्वप्न में दिखाई दिए और उन्होंने यह कहते हुए कि ‘कुछ समय तक रोज़े रखना आसमानी प्रकाश के स्वागत के लिए नबूवत के परिवार की सुन्नत है।’”

अर्थात् खुदा तआला के आसमानी नूरों के स्वागत के लिए रोज़ा रखना भी नबूवत के परिवार की परंपरा है। इस प्रकार खुदा तआला ने संकेत रूप में आपको बता दिया कि आपको एक विशेष स्थान प्रदान किया जाने वाला है।

आगे आप फ़रमाते हैं:

“इसलिए मैंने कुछ समय तक रोज़े रखने को उचित समझा, लेकिन साथ ही यह विचार आया कि इसे गुप्त रूप से करना बेहतर है। अतः मैंने यह तरीका अपनाया कि घर से अपने बैठने के स्थान पर खाना मंगवाता और फिर उसे छिपाकर कुछ अनाथ बच्चों को दे देता, जिन्हें मैंने पहले ही समय पर आने के लिए कहा होता था। इस प्रकार मेरा पूरा दिन रोज़े में बीतता और इन रोज़ों की जानकारी खुदा तआला के सिवा किसी को नहीं होती थी।

फिर दो-तीन सप्ताह बाद मुझे महसूस हुआ कि इन रोज़ों में, क्योंकि मैं एक समय पेट भरकर खा लेता हूँ, मुझे कोई कठिनाई नहीं होती। इसलिए मैंने भोजन कम करने का निर्णय किया। फिर मैं धीरे-धीरे भोजन कम करता गया, यहाँ तक कि पूरे दिन-रात में केवल एक रोटी पर गुज़ारा करता था। फिर मैं इसे और कम करता गया, यहाँ तक कि केवल कुछ तोले रोटी ही चौबीस घंटे में मेरा भोजन रह गया।

लगभग आठ या नौ महीने तक मैंने इसी प्रकार किया और इतनी कम मात्रा में भोजन लेने के बावजूद, जिसे दो-तीन महीने का बच्चा भी सहन नहीं कर सकता, खुदा तआला ने मुझे हर प्रकार की विपत्ति और कष्ट से सुरक्षित रखा।

इन रोज़ों के अनुभवों में से एक यह भी था कि मुझे अत्यंत सूक्ष्म आध्यात्मिक दर्शन प्राप्त हुए। इस दौरान मुझे कुछ पूर्व नबियों से मिलने का अवसर मिला और इस उम्मत के उच्च दर्जे के संतों से भी मुलाकात हुई। एक बार जाग्रत अवस्था में ही

मैंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को हसन और हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा, अली रज़ियल्लाहु अन्हु और फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ देखा। यह स्वप्न नहीं था बल्कि जाग्रत अवस्था के समान था।

इसी प्रकार कई पविल व्यक्तियों से मुलाकात हुई, जिनका वर्णन लंबा हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आध्यात्मिक नूर स्तंभों के रूप में दिखाई देते थे—कुछ सफ़ेद, कुछ हरे और कुछ लाल रंग के—जो अत्यंत आकर्षक थे और उनका वर्णन करना संभव नहीं है। वे सीधे आकाश की ओर उठते हुए प्रतीत होते थे।

इन नूरानी स्तंभों का हृदय से ऐसा संबंध था कि उन्हें देखकर हृदय को अत्यंत आनंद प्राप्त होता था। संसार में कोई भी आनंद ऐसा नहीं हो सकता जैसा उन्हें देखकर आत्मा को मिलता था।”

आप फ़रमाते हैं:

“मेरे विचार में वे स्तंभ खुदा तआला और बंदे के प्रेम के मिलन का प्रतीक थे। एक नूर हृदय से निकलता था और दूसरा ऊपर से उतरता था, और दोनों के मिलन से एक स्तंभ का रूप बन जाता था।”

“ये आध्यात्मिक बातें हैं जिन्हें संसार के लोग समझ नहीं सकते, क्योंकि वे उनकी दृष्टि से बहुत दूर हैं, लेकिन कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जिन्हें इन बातों की जानकारी होती है।”

फिर आप फ़रमाते हैं:

“इस अवधि के रोज़ों से मुझे विभिन्न प्रकार के आध्यात्मिक अनुभव प्राप्त हुए। एक और लाभ यह हुआ कि मैंने अपने भीतर यह क्षमता पाई कि आवश्यकता पड़ने पर मैं अत्यधिक भूख भी सहन कर सकता हूँ।

मैंने कई बार सोचा कि यदि कोई शक्तिशाली और बलवान व्यक्ति मेरे साथ उपवास करने पर मजबूर किया जाए, तो वह मुझसे पहले ही समाप्त हो जाए। इससे मुझे यह भी अनुभव हुआ कि मनुष्य भूख सहन करने में बहुत आगे बढ़ सकता है। लेकिन जब तक मनुष्य का शरीर कठिनाइयों को सहने वाला न बन जाए, वह आध्यात्मिक ऊँचाइयों तक नहीं पहुँच सकता।”

लेकिन आप ने यह भी फ़रमाया:

“मैं हर किसी को यह सलाह नहीं देता कि वह ऐसा करे, और न ही मैंने अपनी इच्छा से ऐसा किया। यह सब खुदा तआला के आदेश से हुआ।

मैंने कुछ अज्ञानी दरवेशों को भी देखा है जिन्होंने कठोर साधनाएँ कीं और अंततः मानसिक संतुलन खो बैठे या अन्य बीमारियों में पड़ गए। हर व्यक्ति की मानसिक क्षमता समान नहीं होती। इसलिए जिनकी प्रकृति कमजोर है, उनके लिए ऐसी साधनाएँ हानिकारक हो सकती हैं।”

अंत में आप फ़रमाते हैं:

“इसलिए बेहतर है कि मनुष्य अपनी ओर से अपने आपको कठोर साधनाओं में न डाले, बल्कि सरल दीन को अपनाएँ और सुन्नत पर अमल करे।

हाँ, यदि खुदा तआला की ओर से कोई प्रेरणा हो और वह इस्लाम की शुद्ध शरीअत के विरुद्ध न हो, तो उसे पूरा करना आवश्यक है। लेकिन आजकल के अधिकतर अज्ञानी फकीरों की सिखाई हुई साधनाओं का परिणाम अच्छा नहीं होता, इसलिए उनसे बचना चाहिए।”

(किताब अल-बरिया, रूहानी खज़ाइन, जिल्द 13, पृष्ठ 196 से 200, शेष हाशिया)

अब भी कुछ लोग कहते हैं कि यह करो और वह करो, तो ऐसे लोगों की बातें नहीं माननी चाहिए। बल्कि आजकल तो टीवी कार्यक्रमों में भी ऐसी बातें आती हैं। इंसान को देखना चाहिए कि संतुलन क्या है और उसी को अपनाना चाहिए। जितनी अपनी क्षमता हो, उतने में खुदा तआला के अधिकार (हकूकुल्लाह) और बंदों के अधिकार (हकूकुल इबाद) अदा करने की कोशिश करनी चाहिए। इबादत के जो तरीके और न्यूनतम स्तर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बताए हैं, उन्हें अवश्य प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए और फिर उसमें धीरे-धीरे उन्नति करते रहना चाहिए। धीरे-धीरे उन्नति होती भी है, लेकिन बिना वजह अपने आप को कठिनाई में डालना इस्लाम ने मना किया है और इसी बात से आप ने भी रोका है।

बचपन से आपका क्या हाल था? एक रिवायत में आता है। मिस्त्री फ़कीर मुहम्मद साहिब कहते हैं:

“मेरे पिता, जिनका नाम जीवा था, हमें सुनाया करते थे कि मिर्ज़ा साहिब एक बार छत से गिर पड़े और उन्हें गंभीर चोट लगी। जब हमें यह खबर मिली तो हम

हाल पूछने गए। जब आपको होश आया तो आपने पूछा कि क्या नमाज़ का समय हो गया है या नहीं? आपको नमाज़ से इतना प्रेम था। मैं उस समय छोटा था जब यह घटना सुनाई जाती थी।”

(रजिस्टर रिवायतात सहाबा, ग़ैर-मुतबूआ, जिल्द 1, पृष्ठ 58, रिवायत मिस्त्री फ़क़ीर मुहम्मद साहिब, तरखान कादिराबाद)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत डॉक्टर मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत बयान की है:

“1895 में मुझे पूरा रमज़ान क़ादियान में बिताने का अवसर मिला और मैंने पूरे महीने हज़रत साहिब के पीछे तहज़ुद (तरावीह) की नमाज़ अदा की। आपकी आदत थी कि वित्त नमाज़ रात के पहले हिस्से में पढ़ लेते थे और तहज़ुद की नमाज़ आठ रकअत, दो-दो रकअत करके रात के आखिरी हिस्से में पढ़ते थे। इसमें आप हमेशा पहली रकअत में आयतुल कुर्सी (هُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ سَعَى يَأْقُومُ بِرَحْمَتِكَ أَسْتَغِيثُ) तक) पढ़ते थे और दूसरी रकअत में सूरह इज़्लास पढ़ते थे। रकू और सजदे में ‘يَا’ अधिक पढ़ते थे और इतनी आवाज़ में पढ़ते थे कि मैं सुन सकता था।”

अर्थात् आप मध्यम आवाज़ में पढ़ते थे—न बहुत ऊँची, न बहुत धीमी।

“आप हमेशा तहज़ुद के बाद सहरी करते थे और इसमें इतनी देर कर देते थे कि कभी-कभी खाते-खाते अज़ान हो जाती थी और कभी अज़ान समाप्त होने तक भी खाते रहते थे।”

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने लिखा है:

“असल मसला यह है कि जब तक पूर्व दिशा में सच्ची सुबह (सुबह-ए-सादिक़) प्रकट न हो जाए, सहरी खाना जायज़ है। इसका अज़ान से सीधा संबंध नहीं है, क्योंकि सुबह की अज़ान भी सच्ची सुबह के प्रकट होने पर निर्धारित होती है। इसलिए लोग सामान्यतः अज़ान को ही सहरी की सीमा समझ लेते हैं।”

उन्होंने उदाहरण दिया कि “क़ादियान में अज़ान सच्ची सुबह के साथ ही हो जाती थी, बल्कि कभी-कभी गलती से उससे पहले भी हो जाती थी। इसलिए ऐसे अवसरों पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अज़ान का अधिक ध्यान नहीं करते थे और सच्ची सुबह के स्पष्ट होने तक सहरी करते रहते थे। वास्तव में शरीअत का उद्देश्य यह नहीं है कि गणना के अनुसार सुबह होते ही खाना बंद कर दिया जाए, बल्कि जब आम लोगों को सुबह की सफेदी दिखाई देने लगे, तब खाना छोड़ देना चाहिए।

हदीस में भी आता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि बिलाल की अज़ान पर सहरी बंद न करो, बल्कि इब्र-ए-मकतूम की अज़ान तक खाते-पीते रहो, क्योंकि इब्र-ए-मकतूम अंधे थे और जब तक लोगों में यह शोर न हो जाता कि सुबह हो गई है, तब तक अज़ान नहीं देते थे।”

(सीरतुल महदी, जिल्द 1, हिस्सा 2, पृष्ठ 295-296, रिवायत 320)

आजकल समय और भी आधुनिक हो गया है और आधुनिक साधनों से सच्ची सुबह का सही समय ज्ञात हो जाता है, इसलिए सामान्यतः अज़ान को अंतिम सीमा माना जाता है और उसी के अनुसार पालन किया जाता है। फिर भी कभी-कभी गलती की संभावना हो सकती है। यदि कहीं अज़ान गलती से जल्दी हो जाए, तो वही सिद्धांत लागू होगा जो ऊपर बताया गया है।

रमज़ान शुरू हो रहा है, इसलिए यह मार्गदर्शन भी दिया गया है। लेकिन लोगों को इतना भी ढीलापन नहीं करना चाहिए कि यह देखते रहें कि दिन निकला है या नहीं। हमारी अज़ानें और समय बड़े हिसाब से निर्धारित किए जाते हैं और आज के आधुनिक समय में गलती की संभावना बहुत कम होती है। इसलिए हर क्षेत्र और देश के अनुसार बनाए गए समय-सारिणी (चार्ट) का पालन करना चाहिए।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक रिवायत बयान की है कि:

“मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझसे बयान किया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के समय एक बार वर्षा के लिए विशेष नमाज़ (नमाज़-ए-इस्तिस्का) अदा की गई, जिसमें आप भी शामिल हुए। शायद मौलवी मुहम्मद अहसन साहिब इमाम थे। लोग इस नमाज़ में बहुत रोए, लेकिन आप में अत्यधिक संयम था, इसलिए मैंने आपको रोते नहीं देखा। और मुझे याद है कि इसके बाद बहुत जल्दी बादल आए और वर्षा हो गई, बल्कि शायद उसी दिन बारिश हो गई थी।”

(सीरतुल महदी, जिल्द 1, हिस्सा 2, पृष्ठ 393, रिवायत 435)

इससे कोई यह न समझे कि नमाज़ में आप रोते नहीं थे। अपने आका सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पालना में आपकी इबादत के ऐसे भी वर्णन मिलते हैं कि सजदे की अवस्था में आपके सीने से ऐसी आवाज़ आती थी जैसे हांडी उबल रही हो। आप सजदे में पड़े होते और अत्यंत दर्द के साथ रोते रहते थे।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत अम्मां जान नुसरत जहाँ बेगम साहिबा रज़ियल्लाहु अन्हा की रिवायत बयान करते हैं कि:

“हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पाँचों वक्त की नमाज़ के अलावा सामान्यतः दो प्रकार की नफ़ल नमाज़ें पढ़ते थे। एक नमाज़-ए-इशराक (दो या चार रकअत), जिसे आप कभी-कभी पढ़ते थे, और दूसरी तहज़ुद (आठ रकअत), जिसे आप हमेशा पढ़ते थे, सिवाय इसके कि आप बहुत अधिक बीमार हों। लेकिन ऐसी स्थिति में भी आप बिस्तर पर लेटे-लेटे दुआ कर लेते थे और अंतिम समय में कमजोरी के कारण अधिकतर बैठकर तहज़ुद पढ़ते थे।”

(सीरतुल महदी, जिल्द 1, हिस्सा 1, पृष्ठ 4, रिवायत 3)

हज़रत मौलवी याक़ूब अली साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं कि जब आप मुकदमों की पैरवी के लिए जाते थे, तो अपने पिता की आज्ञा का पालन करते हुए जाते थे। वहाँ भी आप इस बात का पूरा ध्यान रखते थे कि मुकदमे के दौरान कोई नमाज़ क़ज़ा न हो और वास्तव में कभी कोई नमाज़ क़ज़ा नहीं हुई।

अदालत में भी नमाज़ का समय होते ही आप इस तरह नमाज़ में लग जाते थे जैसे कोई और काम ही न हो। कई बार ऐसा हुआ कि आप नमाज़ में व्यस्त हैं और उधर मुकदमे के लिए बुलावा आ गया, लेकिन आप पूरी शांति से नमाज़ में लगे रहे।

एक बार आपने फ़रमाया कि मैं बटाला एक मुकदमे के सिलसिले में गया। नमाज़ का समय हुआ तो मैं नमाज़ पढ़ने लगा। चपरासी ने बुलाया, लेकिन मैं नमाज़ में ही रहा। दूसरा पक्ष उपस्थित हो गया और उसने एकतरफ़ा निर्णय की मांग की, लेकिन अदालत ने उसकी बात नहीं मानी और मेरे पक्ष में निर्णय दे दिया। जब मैं नमाज़ से फ़ारिग होकर पहुँचा तो मुझे लगा कि शायद मेरी अनुपस्थिति के कारण मेरे खिलाफ़ फैसला हो गया होगा, लेकिन न्यायाधीश ने कहा कि मैं तो आपके पक्ष में निर्णय दे चुका हूँ।”

(उद्धारित: हयात-ए-अहमद, जिल्द 1, हिस्सा 1, पृष्ठ 87)

यह भी इबादत की बरकतों का एक उदाहरण है कि खुदा तआला ने इस प्रकार कृपा की।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अम्मां जान रज़ियल्लाहु अन्हा की एक और रिवायत बयान की है कि जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम घर में मगरिब की नमाज़ पढ़ते थे तो अक्सर सूरह यूसुफ़ की यह आयत पढ़ते थे:

إِنَّمَا أَشْكُو بَيْنِي وَبَيْنِي إِلَى اللَّهِ

अर्थात् “मैं तो अपने दुख और ग़म की फ़रियाद केवल खुदा तआला से करता हूँ।”

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आवाज़ में बहुत दर्द और प्रभाव था और आपकी क़िराअत में एक विशेष लय होती थी।

(उद्धारित: सीरतुल महदी, जिल्द 1, हिस्सा 1, पृष्ठ 61, रिवायत 85)

इसी प्रकार मिर्ज़ा मुहम्मद दीन साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान किया है कि आप मस्जिद में फ़र्ज़ नमाज़ अदा करते थे, जबकि सुन्नत और नफ़ल घर पर पढ़ते थे। ईशा की नमाज़ के बाद आप सो जाते थे और आधी रात के बाद उठकर नफ़ल अदा करते थे। इसके बाद कुरआन-ए-करीम पढ़ते रहते थे। आप मिट्टी का दीया जलाते थे और फ़ज़्र की अज़ान तक तिलावत करते रहते थे।

(उद्धारित: रोज़नामा अल-फ़ज़ल क़ादियान, 2 दिसंबर 1941, पृष्ठ 3)

एक और जीवन-चरित्र लिखने वाले ने लिखा है कि आपको कुरआन-ए-करीम और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत से गहरा प्रेम था, और आपकी जो भी इबादतें थीं, वे कभी भी कुरआन और सुन्नत की सीमा से बाहर नहीं जाती थीं।

पाँच वक्त की नमाज़ के अलावा तहज़ुद की नमाज़ का आपको बहुत ध्यान रहता था। इशराक की नमाज़ भी पढ़ लेते थे, लेकिन तहज़ुद की नमाज़ से विशेष

प्रेम था। नमाज़ में आपका ध्यान खुदा तआला की ओर इतना गहरा और पूर्ण होता था कि मानो आप इस दुनिया में ही नहीं हैं। नमाज़ तहज्जुद में सूरह फ़ातिहा को बहुत दर्द और ध्यान के साथ पढ़ते थे और बहुत दुआएँ करते थे। शुरू में कभी-कभी अगर नमाज़ में ध्यान नहीं होता था तो आप नमाज़ बार-बार पढ़ते थे। फ़रमाते थे कि यह तरीका मैंने एक शराबी से सीखा है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि एक बार मुझे नमाज़ में दिल की हाज़िरी नहीं हो रही थी, तो मैं जंगल की ओर निकला कि वहाँ जाकर नमाज़ पढ़ूँ। रास्ते में बाज़ार पड़ा। वहाँ एक हिंदू अपने दोस्त से कह रहा था कि रात हमने शराब का एक पैग पिया, लेकिन नशा नहीं हुआ, तो दूसरा पिया। फिर भी नशा नहीं हुआ तो तीसरा पिया। इसी तरह बार-बार पीते रहे, यहाँ तक कि नशा हो गया। फ़रमाते थे कि मैंने सोचा कि मैं भी बार-बार नमाज़ पढ़ूँगा, यहाँ तक कि आध्यात्मिक नशा (दिल की हाज़िरी) प्राप्त हो जाए।

(मजहिद-ए-आज़म, डॉ. बशारत अहमद साहब, जिल्द 1, पृष्ठ 26, प्रकाशित: अहमदिया अंजुमन इशाअत-ए-इस्लाम लाहौर)

फर्ज़ नमाज़ तो बार-बार नहीं पढ़ी जा सकती, लेकिन नफ़ल नमाज़ के बारे में आपने यह कहा कि मैं बार-बार पढ़ूँगा ताकि वह स्थिति (दिल की हाज़िरी) प्राप्त हो जाए।

नमाज़ के अलावा आपका नियमित कार्य कुरआन-ए-करीम की तिलावत, दुरुद शरीफ़ और अस्तग़फ़ार था। कुरआन-ए-करीम से आपको अत्यधिक प्रेम था। आप दिन-रात, उठते-बैठते और चलते हुए भी उसे पढ़ते रहते थे और ज़ोर-ज़ोर से रोते थे। जैसा कि पहले बताया गया, यदि किसी समय नमाज़ में रोते हुए न दिखे तो इसका यह मतलब नहीं कि आप रोते नहीं थे। आप रोया करते थे। कुरआन-ए-करीम पढ़कर भी आप पर गहरा भावुक प्रभाव पड़ता था। दुरुद शरीफ़ आप बहुत अधिक, समझकर और दर्द के साथ पढ़ते थे, यहाँ तक कि कई बार इसके साथ रोना भी शामिल हो जाता था।

एक अवसर पर इशराक की नमाज़ का ज़िक्र करते हुए आपने स्वयं बयान किया और यहाँ शहद की महत्ता भी बताई। बात चिकित्सा और इबादत दोनों पर आई। शहद और मधुमेह (डायबिटीज़) के विषय में चर्चा हो रही थी कि क्या मधुमेह में शहद खाना चाहिए या नहीं। आपने फ़रमाया कि मुझे मधुमेह से बहुत कष्ट था। डॉक्टरों ने इसमें मीठी चीज़ों को बहुत हानिकारक बताया है। यानी जब किसी को शुगर (डायबिटीज़) हो, तो मीठा खाना बहुत नुकसानदायक होता है।

आप कहते हैं कि आज मैं इस पर विचार कर रहा था कि मुझे ध्यान आया कि बाज़ार की चीनी आदि तो अक्सर बुरे और ग़लत काम करने वाले लोग बनाते हैं, इसलिए यदि उससे नुकसान हो तो आश्चर्य नहीं। लेकिन शहद तो खुदा तआला की प्रेरणा से तैयार होता है, इसलिए उसकी विशेषता अन्य मिठाइयों जैसी नहीं हो सकती। यदि ऐसा होता, तो हर मिठाई के बारे में “शिफ़ा लोगों के लिए” कहा जाता, लेकिन इसमें केवल शहद को ही विशेष किया गया है।

इसलिए यह विशेषता उसके लाभ की दलील है। और चूँकि इसकी तैयारी ईश्वरीय प्रेरणा से होती है, इसलिए मधुमक्खी जो फूलों से रस लेती है, वह अवश्य ही लाभदायक तत्व ही लेती होगी। इस विचार से मैंने थोड़ा शहद लेकर उसमें केवड़ा मिलाकर पिया, तो थोड़ी देर बाद मुझे बहुत लाभ हुआ, यहाँ तक कि मैं चलने-फिरने के योग्य हो गया। पहले मधुमेह के कारण बहुत कमजोरी हो गई थी। फिर मैं घर के लोगों को लेकर बाग़ तक गया और वहाँ इशराक की दस रकअत नमाज़ अदा की।

(मलफूज़ात, जिल्द 7, पृष्ठ 34-35, संस्करण 2022)

हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक साहब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि एक बार बहुत ज़ोर का भूकंप आया। सभी मकान और चीज़ें हिलने लगीं। लोग घबराकर परेशान हो गए। ऐसे समय में खुदा के मसीह की स्थिति देखने योग्य थी। हम हृदीसों में पढ़ते थे कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ऐसे आकाशीय और भौतिक घटनाओं पर खुदा तआला के भय का गहरा प्रभाव अपने चेहरे पर प्रकट करते थे। थोड़ा सा बादल आने पर भी आप बेचैन हो जाते थे, कभी बाहर जाते, कभी अंदर आते।

इसी प्रकार उस समय भी आपने इस कहावत को व्यवहार में सच कर दिखाया कि “जो जितना अधिक जानने वाला होता है, वह उतना ही अधिक खुदा से डरने वाला होता है।”

भूकंप शुरू होते ही आप अपने परिवार और बच्चों सहित खुदा तआला के सामने दुआ करने लगे और सज्दे में गिर गए। काफी देर तक क्रियाम, रुकू और सज्दे में पूरा परिवार और सेवकगण लगे रहे और खुदा तआला की महानता के सामने काँपते और डरते रहे।

(ज़िक्र-ए-हबीब, हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक साहब रज़ियल्लाहु अन्हु, पृष्ठ 102)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने जमाअत के साथ नमाज़ की महत्ता बताते हुए कहा कि आजकल लोग दूर-दूर रहते हैं और मस्जिदों में जाना कठिन होता है, इसलिए पहले के समय में लोग घरों में ही नमाज़ पढ़ लेते थे। आपने फ़रमाया कि घर में अलग-अलग नमाज़ नहीं पढ़नी चाहिए, बल्कि जमाअत के साथ पढ़नी चाहिए।

आपने कहा कि जमाअत की नमाज़ का एक तरीका यह भी है कि पत्नी और बच्चों को साथ लेकर घर में ही जमाअत से नमाज़ पढ़ ली जाए। यदि मस्जिद नहीं जा सकते, तो घर में ही जमाअत बना लो। आपने कहा कि दूरी के कारण अलग-अलग नमाज़ पढ़ने की आदत हो गई है और जमाअत की नमाज़ की महत्ता लोगों के दिलों में कम हो गई है। इसलिए इस आदत को छोड़ो और जमाअत से नमाज़ पढ़ने की आदत डालो।

आज भी जहाँ कहीं कमी है, वहाँ लोगों को ध्यान देना चाहिए। घर में बच्चों के साथ नमाज़ पढ़ें, इससे बच्चों को भी नमाज़ की आदत पड़ेगी।

फिर आपने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उदाहरण दिया कि जब आप मस्जिद नहीं जा सकते थे, तो घर में ही जमाअत कर लेते थे और बहुत कम ही किसी मजबूरी में अलग नमाज़ पढ़ते थे। अक्सर हमारी माता जी को साथ लेकर जमाअत कराते थे और उनके साथ अन्य महिलाएँ भी शामिल हो जाती थीं।

(उद्धारित: “बाज़ अहम और ज़रूरी उमूर”, अनवारुल उलूम, जिल्द 16, पृष्ठ 493)

हज़रत सैयद ज़ैनुल आबिदीन वलीउल्लाह शाह साहब रज़ियल्लाहु अन्हु की एक रिवायत है। वे बयान करते हैं कि 1935 में मैं सियालकोट गया। वहाँ मेरी मुलाकात एक बहुत वृद्ध महिला माई हयात बीबी से हुई, जो फ़ज़ल दीन साहब की बेटी थीं और हाफ़िज़ मुहम्मद शफ़ी क़ारी की माता थीं।

वे अपने घर की दहलीज़ पर बैठी थीं। हमने उन्हें नहीं पहचाना, लेकिन उन्होंने हमें पहचान लिया। सलाम किया और बुलाया। उस समय उनकी उम्र 105 वर्ष थी। उन्होंने बताया कि गदर के समय जब यहाँ अफ़रा-तफ़री थी, दफ़्तरों और कचहरियों को आग लगा दी गई थी, तब मैं जवान थी।

बातचीत के दौरान उन्होंने बताया कि मुझे मरज़ा साहब, यानी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से उस समय से परिचय है, जब आप पहली बार सियालकोट आए थे और नौकरी के समय यहाँ रहते थे। उस समय आपकी उम्र कम थी, चेहरे पर हल्की मूँछ-दाढ़ी आ रही थी और दाढ़ी पूरी तरह नहीं आई थी।

सियालकोट आने के बाद आप मेरे पिता के घर आए और कहा कि आपका दूसरा मकान मुझे रहने के लिए दे दें (किराए पर लेना था)। मेरे पिता ने दरवाज़ा खोला और आपको अंदर ले गए। पानी, चारपाई और जानमाज़ रखी गई।

आपकी आदत थी कि जब कचहरी से लौटते तो पहले मेरे पिता को बुलाते और उनके साथ घर जाते। अधिकतर समय उनका उठना-बैठना हमारे पिता के साथ ही था। खाना भी हमारे यहाँ ही बनता था और मेरे पिता ही आपको खाना पहुँचाते थे।

आप अंदर जाकर दरवाज़ा बंद कर लेते और आँगन में जाकर कुरआन-ए-

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY

थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान

सभी प्रकार के शारीरिक टेस्ट (खून, मल, बलगम इत्यादि) कंप्यूटराइज़्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.



चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :- +91-9646561639, +91-8557901648

करीम पढ़ते रहते। मेरे पिता बताया करते थे कि कुरआन पढ़ते-पढ़ते कभी-कभी आप सज्दे में गिर जाते और लंबे सज्दे करते, यहाँ तक कि रोते-रोते ज़मीन भी भीग जाती थी।

माई साहिबा ने यह बातें अपने बेटे की मौजूदगी में बयान करते हुए कई बार कहा कि “मैं आपके नाम पर कुर्बान जाऊँ।”

(उद्धारित: सीरतुल महदी, जिल्द 1, हिस्सा तृतीय, पृष्ठ 594-595, रिवायत 625)

हज़रत शेख याकूब अली साहब इरफानी रज़ियल्लाहु अन्हु ने मौलवी मीर हसन साहब, जो Allama Iqbal के शिक्षक थे, की एक रिवायत बयान की है कि हज़रत मिर्ज़ा साहब पहले मोहल्ला कश्मीरीयाँ में, जो इसी पापों से भरे इस गुनहगार के गरीब घर के बहुत पास है, उमरा नामी कश्मीरी के मकान में किराए पर रहते थे। कचहरी से जब आते थे तो कुरआन-ए-करीम की तिलावत में लगे रहते थे। बैठकर, खड़े होकर, चलते हुए तिलावत करते थे और बहुत रोते थे। इतनी विनम्रता और नम्रता के साथ तिलावत करते थे कि उसकी मिसाल नहीं मिलती।

फिर लिखते हैं कि उस समय के अनुसार, दुनियादार लोग कचहरी के कामों और सिफारिश के लिए आपके पास आ जाते थे, जैसे वे अधिकारियों के पास जाते हैं ताकि उनका मुकदमा उनके पक्ष में हो जाए। यही लोगों की आदत होती है कि सिफारिश के लिए अदालत में काम करने वालों के पास पहुँच जाते हैं। तो लिखा है कि उसी उमरा मकान मालिक के बड़े भाई फ़ज़ल दीन साहब थे, जो आम तौर पर मोहल्ले में इज्जत से देखे जाते थे।

एक बार लोगों को कचहरी के काम के लिए अपने पास बैठे देखकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मियाँ फ़ज़ल दीन को बुलाकर कहा: “मियाँ फ़ज़ल दीन! इन लोगों को समझा दो कि यहाँ न आया करें। न अपना समय बर्बाद करें, न मेरा समय खराब करें। मैं कुछ नहीं कर सकता। मैं हाकिम नहीं हूँ। जितना काम मेरे संबंधित होता है, वह कचहरी में ही कर आता हूँ।”

चुनाँचे मियाँ फ़ज़ल दीन उन लोगों को समझाकर भेज देते थे।

(उद्धारित: हयात-ए-अहमद, जिल्द 1, हिस्सा तृतीय, पृष्ठ 370-371)

पटियाला के एक गैर-अहमदी मुंशी अब्दुलवाहिद साहब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कुरआन तिलावत के बारे में बयान करते हैं कि

“हज़रत अलैहिस्सलाम चौदह-पंद्रह वर्ष की आयु में सारा दिन कुरआन शरीफ पढ़ते रहते थे और हाशिये पर नोट लिखते रहते थे।”

(तारीख़-ए-अहमदियत, जिल्द 1, पृष्ठ 64)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बारे में लिखते हैं कि “मिर्ज़ा साहब को बचपन से ही अपने पिता के जीवन में एक ऐसा कड़वा अनुभव देखने का अवसर मिला कि दुनिया से उनका मन हट गया, और जब वे बहुत छोटे थे, तब भी उनकी सभी इच्छाएँ खुदा तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने में लगी हुई थीं।

चुनाँचे आपके जीवन-लेखक शेख याकूब अली साहब एक अद्भुत घटना लिखते हैं, जो आपके बहुत छोटे बचपन की है। वे लिखते हैं कि जब आपकी उम्र बहुत कम थी, तब आप एक अपनी हमउम्र लड़की से, जिससे बाद में आपका विवाह भी हुआ, कहा करते थे: “ऐ बदनसीब! दुआ कर कि खुदा मुझे नमाज़ नसीब करे।”

इस वाक्य से, जो अत्यंत छोटी उम्र का है, पता चलता है कि बचपन से ही आपके दिल में कैसे भाव थे और आपकी इच्छाओं का केंद्र केवल खुदा ही था। साथ ही इससे उस बुद्धिमत्ता का भी पता चलता है जो बचपन से ही आपके अंदर पैदा हो गई थी, क्योंकि इससे स्पष्ट होता है कि उस समय भी आप सभी इच्छाओं को पूरा करने वाला खुदा तआला को ही मानते थे और इबादत की तौफ़ीक भी उसी पर निर्भर समझते थे।

ऐसे घर में परवरिश पाकर, जहाँ छोटे-बड़े लोग दुनिया को ही अपना सब कुछ समझते थे, इस प्रकार की बात कहना केवल उसी दिल से निकल सकता है जो दुनिया की मिलावत से पूरी तरह पाक हो और जिसे दुनिया में बड़ा परिवर्तन लाने के लिए खुदा तआला की सहायता प्राप्त हो।”

(सीरत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद

अहमद रज़ियल्लाहु अन्हु, पृष्ठ 9, प्रकाशित: मजलिस खुदा मुल अहमदिया पाकिस्तान)

हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक साहब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: “मैं बचपन से रोज़े रखने का आदी

हूँ। एक बार बचपन में रोज़ा रखा तो बीमार हो गया, लेकिन उसके बाद मैंने पूरे 29 रोज़े रखे और कोई तकलीफ़ नहीं हुई। तब मेरे लिए वह खुशी की ईद थी। रोज़े के विशेष लाभ होते हैं। जैसे हर फल का अलग स्वाद होता है, वैसे ही हर इबादत की अलग मिठास होती है। इन इबादतों में आध्यात्मिकता होती है, जिसे मनुष्य बयान नहीं कर सकता। यदि शौक हो, तो दर्द और तकलीफ़ कम हो जाती है। चाहिए कि इबादत में मनुष्य की आत्मा अत्यंत कोमल होकर पानी की तरह बहकर खुदा से मिल जाए।”

(ज़िक्र-ए-हबीब, हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक साहब रज़ियल्लाहु अन्हु, पृष्ठ 193)

प्रसिद्ध नेता ज़फ़र अली ख़ान साहब, जो ‘ज़मींदार’ अख़बार के संपादक थे, उनके पिता मौलवी सिराजुद्दीन साहब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सियालकोट प्रवास के बारे में लिखते हैं कि

“1877 में हमें एक रात क़ादियान में आपके यहाँ मेहमान बनने का सम्मान मिला। उन दिनों भी आप इबादत और वज़ाइफ़ में इतने मग्न रहते थे कि मेहमानों से भी कम बातचीत करते थे।”

(हयात-ए-अहमद, जिल्द 1, हिस्सा तृतीय, पृष्ठ 374)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक और रिवायत बयान की है कि हज़रत भाई अब्दुर्रहमान साहब क़ादियानी रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि “ईद-उल-अज़हा 1900 से एक दिन पहले, जो हज का दिन था, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहब (ख़लीफ़ा प्रथम) को संदेश भेजा कि मैं यह हज का दिन विशेष दुआओं में बिताना चाहता हूँ। इसलिए जो लोग दुआ की दरख़्वास्त देना चाहें, आप उनके नाम लिखकर सूची बनाकर मुझे भेज दें।

चुनाँचे उस दिन बड़ी संख्या में दुआ की दरख़्वास्तें पहुँचीं, और कुछ लोगों ने सीधे भी अपनी अर्जियाँ भेजीं। चूँकि उस समय ईद के अवसर पर बाहर से भी बहुत से लोग क़ादियान आते थे, वे भी इस आध्यात्मिक माहौल में शामिल हो गए, और वह दिन क़ादियान में विशेष दुआओं, विनम्र प्रार्थनाओं और बड़ी बरकतों के साथ गुज़रा।”

(सीरत तैय्यबा, हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु, पृष्ठ 204)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जमाअत की नमाज़ के बारे में अपनी भावना बयान करते हुए एक सभा में कहा: “आज मेरे सिर की हालत ठीक नहीं, चक्कर आ रहा है। लेकिन जब जमाअत का समय आता है, तो यह ख्याल आता है कि सब लोग जमाअत में होंगे और मैं शामिल नहीं होऊँगा, तो मुझे दुख होता है। इसलिए गिरते-पड़ते भी मैं चला आता हूँ।”

(मलफूज़ात, जिल्द 7, पृष्ठ 1, संस्करण 2022)

फिर फ़रमाया कि कोशिश करके मैं मस्जिद में आ ही जाता हूँ, और ऐसा एक बार नहीं, कई बार होता है, आज भी यही हुआ है।

आप बीमारी के दिनों में भी जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने की कोशिश करते थे।

हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहब सियालकोटी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि आपकी मुलाक़ात की जगह प्रायः मस्जिद ही होती थी। यदि आप बीमार न हों, तो नियमित पाँचों वक्त जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ते थे और जमाअत की नमाज़ के लिए बहुत ज़ोर देते थे। कई बार आपने कहा कि मुझे इससे अधिक किसी बात का दुख नहीं होता कि नमाज़ जमाअत से न पढ़ी जाए।

वे आगे लिखते हैं कि मुझे याद है, जब लोगों की संख्या कम थी, तो आप बहुत इच्छा प्रकट करते थे कि काश! अपनी ही जमाअत हो, जिसके साथ पाँचों वक्त नमाज़ पढ़ी जाए। आप कहते थे कि मैं दुआ में लगा हूँ और उम्मीद है कि खुदा तआला मेरी दुआ स्वीकार करेगा।

जब यह बात लिखी गई, उस समय नमाज़ियों की संख्या 80-90 हो गई थी। आज तो खुदा तआला के फ़ज़ल से हर देश में हमारी मस्जिदें हैं, इसलिए हमें चाहिए कि हम उन्हें पाँचों वक्त आबाद रखें और हर नमाज़ जमाअत से पढ़ने की कोशिश करें।

मौलवी साहब लिखते हैं कि नमाज़ पढ़ने के बाद आप तुरंत अंदर चले जाते और लेखन के कार्य में लग जाते। फिर मगरिब के बाद मस्जिद में बैठते, वहीं दोस्तों के साथ भोजन करते, और इशा की नमाज़ के बाद अंदर चले जाते।

(उद्धारित: सीरत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, मौलवी अब्दुल

करीम साहब सियालकोटी रज़ियल्लाहु अन्हु, पृष्ठ 43) हज़रत अब्दुल सत्तार साहब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि “हज़रत साहब के दावा से पहले, जब छोटी मस्जिद मुबारक बनी थी, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जुहर, असर, मग़रिब और इशा की नमाज़ जमाअत से पढ़ाते थे। हम केवल तीन व्यक्ति नमाज़ में शामिल होते थे—मियाँ गुलाब, अब्दुल सत्तार और मियाँ जान मुहम्मद साहब।

आप जिस तरह नमाज़ पढ़ाते थे, वह तरीका मुझे याद है। हर नमाज़ अत्यंत भावुकता के साथ पढ़ाते थे। विनम्रता, नम्रता और दीनता के साथ इस तरह नमाज़ अदा करते थे, जैसे कोई बच्चा अपने माता-पिता के सामने रोकर कुछ माँगता है। ऐसी नमाज़ का हम नमाज़ियों के दिलों पर गहरा प्रभाव पड़ता था।”

यह पहला सबक है जो हमें मिला है। जब हज़रत साहब नमाज़ से फ़ारिग होकर बैठते थे, तो हम आपकी सूरत की ओर देखा करते थे, जो बहुत नूरानी होती थी और हमारे दिलों को बहुत आकर्षित करती थी।

(रिवायत अस्हाब-ए-अहमद, जिल्द 2, पृष्ठ 457)

पीर सिराजुल हक़ साहब नुमानी रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि “जनाज़े की नमाज़, जो हज़रत अकदस अलैहिस्सलाम पढ़ाते थे, सुब्हानल्लाह! कैसी उत्तम और पूरी तरह सुन्नत के अनुसार पढ़ाते थे। सैकड़ों बार मुझे यह अवसर मिला कि मैंने आपको जनाज़े की नमाज़ हाज़िर और ग़ायब पढ़ाते देखा और आपके पीछे पड़ी।

एक बार का उल्लेख है कि मियाँ जान मुहम्मद मरहूम क़ादियानी का देहांत हो गया। हज़रत अकदस अलैहिस्सलाम जनाज़े के साथ-साथ चले। यह मरहूम आपके प्रेमियों और समर्पित अनुयायियों में से था... हज़रत अकदस इमाम मऊद अलैहिस्सलाम भी उनसे बहुत प्रेम रखते थे।

हज़रत अकदस अलैहिस्सलाम कितने ही व्यस्त क्यों न होते, जब यह मरहूम आते तो आप सब काम छोड़कर उनसे मिलते। जब उनका जनाज़ा कब्रिस्तान पहुँचा तो हज़रत अकदस अलैहिस्सलाम ने स्वयं इमाम बनकर नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई। नमाज़ इतनी लंबी हुई कि हम नमाज़ियों के खड़े-खड़े पैर दुखने लगे और हाथ बाँधने से दर्द होने लगा।

दूसरों का हाल मैं नहीं कहता, लेकिन अपना हाल बताता हूँ कि मेरा हाल खड़े-खड़े बिगड़ गया, क्योंकि हमने तो दो मिनट में नमाज़ जनाज़ा समाप्त होते देखी थी। फिर मुझे समझ आया कि असली नमाज़ तो यही है। उसके बाद मैं स्थिर हो गया और एक आनंद और सुख महसूस होने लगा, और मन चाहता था कि नमाज़ और लंबी हो।

जब नमाज़ जनाज़ा समाप्त हुई तो हज़रत अकदस अलैहिस्सलाम घर की ओर जाने लगे। एक व्यक्ति ने कहा: हज़ूर! इतनी देर नमाज़ में लगी, आप भी थक गए होंगे।

हज़रत अकदस अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

“हमें थकने से क्या संबंध? हम तो खुदा तआला से दुआएँ कर रहे थे। उस मरहूम के लिए क्षमा माँग रहे थे। माँगने वाला भी कभी थकता है? जो माँगने से थक जाता है, वह रह जाता है। हम माँगने वाले हैं और वह देने वाला है, फिर थकान कैसी? जिससे थोड़ी सी भी आशा होती है, वहाँ याचक डटा रहता है, और खुदा तआला के दरबार में तो सारी आशाएँ हैं। वह देने वाला है, वह बहुत देने वाला है, वह अत्यंत दयालु और कृपालु है और सबका मालिक है।”

(तज़किरतुल महदी, हज़रत पीर सिराजुल हक़ नुमानी रज़ियल्लाहु अन्हु, पृष्ठ 75-78)

अतः थकने का प्रश्न ही नहीं उठता।

खुदा तआला हमें भी इस भावना के साथ अपनी नमाज़ें अदा करने की तौफ़ीक दे। हमने तो हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत भी इस वचन के साथ की है कि हम नमाज़ें खुदा और रसूल के आदेश के अनुसार अदा करेंगे। खुदा तआला के उपकारों को याद करके उसकी स्तुति करते हुए नमाज़ पढ़ेंगे। खुदा तआला हमें इस वचन को पूरा करने की भी तौफ़ीक दे।

नमाज़ के बाद मैं दो जनाज़े ग़ायब पढ़ाऊँगा। पहला जनाज़ा मुकर्रमा अमत-उशा-शरीफ साहिबा, पत्नी महमूद अहमद बट साहब, डेरियाँ वाला, नारोवाल का है, जो कुछ दिन पहले 84 वर्ष की आयु में देहांत कर गई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन।

खुदा तआला के फ़ज़ल से मोसिया थीं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

के सहाबी हज़रत मौलवी उमर दीन साहब रज़ियल्लाहु अन्हु (शादीवाल, जिला गुजरात) की बेटी थीं, जिन्होंने एक स्वप्न के आधार पर 1903 में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के जहलम के सफर के दौरान आपके हाथ पर बैअत की सौभाग्य प्राप्त किया था।

पिछलगंगों में उनके पति के अलावा छह बेटे, पाँच बेटियाँ और पोते-पोतियाँ हैं। उनके एक बेटे आसिफ महमूद बट साहब तंज़ानिया में मुरब्बी हैं और कार्यक्षेत्र में होने के कारण अपनी माता के जनाज़े और दफ़न में शामिल नहीं हो सके। उनके एक पोते उसामा बट भी यहाँ मुरब्बी हैं। उनके एक दामाद भी मुरब्बी हैं। यह वक्फ़-ए-ज़िंदगी करने वाला परिवार है।

उनके बेटे आसिफ महमूद बट साहब लिखते हैं कि वे अनेक गुणों की धनी थीं। सबसे प्रमुख गुण उनका खुदा तआला से गहरा संबंध था। उन्हें सच्चे सपने आते थे जो स्पष्ट रूप से पूरे होते थे। कुरआन-ए-करीम से उन्हें अत्यधिक प्रेम था, जो उन्हें अपने पिता से मिला था।

वे रोज़ फ़ज़ के बाद मोहल्ले के अहमदी और गैर-अहमदी बच्चों को कुरआन-ए-करीम पढ़ाया करती थीं। उन्हें तिलावत करना और सुनना बहुत पसंद था। कहते हैं कि मुझसे भी सुनती थीं, और यदि मैं जानबूझकर रुक जाता, तो तुरंत आगे की आयत पढ़ देती थीं। कुरआन उन्हें लगभग याद था। कहती थीं कि बुढ़ापे में सब कुछ भूल गया है, लेकिन कुरआन खुदा तआला के फ़ज़ल से याद है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकों से उन्हें विशेष लगाव था। हमेशा कोई न कोई पुस्तक पढ़ती रहती थीं। कविता से भी उन्हें बहुत प्रेम था। दर-ए-समीन, कलाम-ए-महमूद और हज़रत खलीफ़तुल मसीह खामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनसिहिल अज़ीज़ की पुस्तकों की कई कविताएँ उन्हें याद थीं।

उनके दामाद मसऊद साहब कहते हैं कि जब मैं क़ादियान गया तो उन्होंने कहा कि वहाँ अधिक से अधिक पैदल चलना, क्योंकि वहाँ की गलियों में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम चला करते थे।

अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहमत का व्यवहार करे और उनकी दुआएँ उनकी संतान के हक़ में स्वीकार हों।

दूसरा जनाज़ा मुकर्रम शेख बशीर अहमद साहब, लाहौर का है। वे हाल ही में 97 वर्ष की आयु में देहांत कर गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन।

खुदा तआला के फ़ज़ल से मोसी थे। उनके पीछे तीन बेटे और पाँच बेटियाँ हैं। वे शेख मुहम्मद दीन साहब मरहूम (मुख्तार आम, सदर अंजुमन अहमदिया) के छोटे बेटे थे। शेख मुबारक अहमद साहब (पूर्व अमीर और मिशनरी इंचार्ज पूर्वी अफ्रीका, यूके और अमेरिका) और शेख नूर अहमद साहब (मुनिर मुबल्लिग़ अरब देशों) के छोटे भाई थे।

वे तहज़ुद पढ़ने वाले, रोज़ा और नमाज़ के पाबंद, मिलनसार और उच्च चरित्र वाले थे। जमाअत अहमदिया लाहौर के सच्चे सेवक थे। जिला अमला के सक्रिय सदस्य रहे और बीस वर्ष से अधिक समय तक अपने क्षेत्र के सदर भी रहे।

उन्होंने बहुत अच्छे ढंग से जमाअत के कार्यों को निभाया और मस्जिद निर्माण तथा अन्य संपत्तियाँ खरीदने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जमाअत की आर्थिक योजनाओं में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते थे और अपने बच्चों को भी इसकी प्रेरणा देते थे।

खिलाफ़त से अत्यंत वफ़ादारी का संबंध था और इसे जीवन भर निभाया, तथा अपनी संतान और रिश्तेदारों को भी इसकी शिक्षा देते रहे।

मैंने भी देखा है कि वे बहुत विनम्र व्यक्ति थे और सभी से नम्रता से मिलते थे। उनकी बेटी आसिफ़ा सईदुल्लाह कहती हैं कि वे फ़ज़ के बाद बहुत सुंदर आवाज़ में तिलावत करते थे, जिससे हम बच्चों की अच्छी शिक्षा हुई।

एक अन्य बेटे कहती हैं कि जब मेरी शादी रब्बा में हुई, तो उन्होंने कहा कि तुम बहुत भाग्यशाली हो कि केंद्र में जा रही हो। खुदा तआला तुम्हें बच्चों की सही परवरिश की तौफ़ीक दे।

इस प्रकार, वे व्यवसायी होने के बावजूद दुनियावी बातों के बजाय धार्मिक शिक्षा देते थे।

अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहमत का व्यवहार करे और उनकी दुआएँ उनकी संतान के लिए स्वीकार करे।

(अल-फ़ज़ल इंटरनेशनल, 6 मार्च 2026, पृष्ठ 2-8)

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पवित्र जीवन

(हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद^{रज़ि.} जमाअत अहमदिया के द्वितीय ख़लीफ़ा)

हज़रत अबू बकर^{रज़ि.} ने जब उन पर ये अत्याचार देखे तो उनके स्वामी को उनका मूल्य अदा करके उन्हें आज़ाद करा दिया। इसी प्रकार अन्य बहुत से दासों को हज़रत अबूबकर^{रज़ि.} ने अपने धन से आज़ाद कराया। उन दासों में से सुहैब^{रज़ि.} एक धनवान व्यक्ति थे। यह व्यापार करते थे तथा मक्का के बड़े लोगों में समझे जाते थे, परन्तु इसके बावजूद कि वह धनवान भी थे और आज़ाद भी हो चुके थे, कुरैश उन्हें मार-मार कर बेहोश कर देते थे। जब रसूले करीम (स.अ.व.) मदीने की ओर हिजरत (प्रवास) कर गए तो आप के पश्चात् सुहैब^{रज़ि.} ने भी चाहा कि वह भी प्रवास करके मदीना चले जाएं, परन्तु मक्का के लोगों ने उन्हें रोका और कहा कि जो दौलत तुम ने मक्का में कमाई है तुम उसे मक्का से बाहर किस प्रकार ले जा सकते हो। हम तुम्हें मक्का से नहीं जाने देंगे। सुहैब^{रज़ि.} ने कहा यदि मैं यह समस्त दौलत छोड़ दूँ तो क्या फिर तुम मुझे जाने दोगे। वे इस बात पर सहमत हो गए और आप अपनी सारी दौलत मक्का वालों के सुपुर्द कर के ख़ाली हाथ मदीने चले गए और रसूले करीम (स.अ.व.) की सेवा में उपस्थित हो गए। आप^{स.} ने फ़रमाया — सुहैब^{रज़ि.} तुम्हारा यह सौदा पहले समस्त सौदों से अधिक लाभप्रद रहा, अर्थात् पहले सामान के बदले में तुम रुपया प्राप्त किया करते थे परन्तु अब रुपए के बदले में तुम ने ईमान प्राप्त किया है।

इन दासों में से अधिकांश प्रकट और अप्रकट दोनों रूपों में दृढसंकल्प रहे, परन्तु कुछ से प्रत्यक्ष रूप में कुछ दुर्बलताएं भी प्रकट हुईं। अतः एक बार रसूले करीम (स.अ.व.) अम्मार^{रज़ि.} नामक दास के पास से गुज़रे तो देखा कि वह सिसकियां ले रहे थे तथा आंखें पोंछ रहे थे। आप (स.अ.व.) ने पूछा अम्मार^{रज़ि.} क्या मामला है ? अम्मार^{रज़ि.} ने कहा हे अल्लाह के रसूल! बहुत ही बुरा हाल है। वे मुझे मारते गए, कष्ट देते गए और उस समय तक नहीं छोड़ा जब तक मेरे मुख से आप^{स.} के विरुद्ध तथा देवी-देवताओं के समर्थन में वाक्य नहीं निकलवा लिए। रसूले करीम (स.अ.व.) ने पूछा परन्तु तुम अपने हृदय में क्या महसूस करते थे ? अम्मार^{रज़ि.} ने कहा हृदय में तो एक अडिग ईमान महसूस करता था। आप ने फ़रमाया— यदि हृदय ईमान पर सन्तुष्ट था तो खुदा तआला तुम्हारी कमज़ोरी को क्षमा कर देगा। आपके पिता यासिर^{रज़ि.} और आपकी मां सुमैया^{रज़ि.} को भी मक्का के काफ़िर बहुत कष्ट देते थे। अतः एक बार जबकि उन दोनों को कष्ट दिया जा रहा था, रसूले करीम (स.अ.व.) उनके पास से गुज़रे। आप^{स.} ने उन दोनों के कष्टों को देखा और आप का हृदय दर्द से भर आया। आप^{स.} उन से सम्बोधित हुए और बोले — صَبْرًا أَلْ يَأْسِرُ فَإِنَّ مَوْعِدَ كُمْ الْجَنَّةَ — हे यासिर के परिजनो ! धैर्य से काम लो, खुदा ने तुम्हारे लिए स्वर्ग तैयार कर रखा है। यह भविष्यवाणी थोड़े ही दिनों में पूर्ण हो गई क्योंकि यासिर^{रज़ि.} मार खाते-खाते स्वर्ग सिधार गए, परन्तु इस पर भी काफ़िरों को धैर्य न आया और उन्होंने उनकी वृद्ध पत्नी सुमैया^{रज़ि.} पर अत्याचार जारी रखे। अतः अबूजहल ने एक दिन क्रोध में उनकी जांच पर भाला मारा जो जांच को चीरता हुआ उनके पेट में घुस गया और तड़पते हुए उन्होंने प्राण त्याग दिए।

नबीरा^{रज़ि.} एक दासी थी। उन्हें अबू जहल ने इतना मारा कि उनकी आँखें नष्ट हो गईं। अबू फ़कीह^{रज़ि.} सफ़वान बिन उमैया के दास थे उन्हें उनका स्वामी और उसका ख़ानदान तपती हुई गर्म पृथ्वी पर लिटा देता था और बड़े-बड़े गर्म पत्थर उनके सीने पर रख देता, यहां तक कि उनकी जीभ बाहर निकल आती। यही हाल शेष दासों का

भी था।

निःसंदेह ये अत्याचार अमानवीय और असहनीय थे, परन्तु जिन लोगों पर ये अत्याचार किए जा रहे थे। वे प्रकट रूप में मनुष्य थे परन्तु अप्रकटित रूप में फ़रिश्ते थे। कुर्आन केवल मुहम्मद (स.अ.व.) के हृदय और उनके कानों पर ही अवतरित नहीं हो रहा था अपितु खुदा उन लोगों के हृदयों में भी बोल रहा था। कभी किसी धर्म की स्थापना नहीं हो सकती जब तक उसके प्रारम्भिक मानने वालों के हृदयों में से खुदा का स्वर बुलन्द न हो। जब मनुष्यों ने उन्हें त्याग दिया, जब परिजनों ने उन से मुख फेर लिया तो खुदा तआला उनके हृदयों में कहता था— मैं तुम्हारे साथ हूँ, मैं तुम्हारे साथ हूँ तब ये समस्त अत्याचार उनके लिए आराम हो जाते थे, गालियां दुआएं बन कर लगती थीं, पत्थर मरहम का कार्य करते थे, विरोध बढ़ते गए परन्तु ईमान भी साथ-साथ उन्नति करता गया, अत्याचार अपनी चरम सीमा को पहुँच गया परन्तु निष्कपटता भी पहली समस्त सीमाओं को पार कर गई।

आज़ाद मुसलमानों पर अत्याचार

आज़ाद मुसलमानों पर भी कुछ कम अत्याचार नहीं होते थे। उनके बुजुर्ग और ख़ानदान के बड़े लोगों को भी नाना प्रकार के कष्ट दिए जाते थे। हज़रत उसमान^{रज़ि.} चालीस वर्ष के लगभग थे तथा धनाढ्य पुरुष थे, परन्तु इस के बवाजूद जब कुरैश ने उन पर अत्याचार करने का निर्णय किया तो उनके चाचा हकम ने उन्हें रस्सियों से बांध कर ख़ूब पीटा। जुबैर^{रज़ि.} बिन अलअवाम एक बहुत बड़े वीर युवक थे। इस्लामी विजयों के युग में वह एक शक्तिशाली कमाण्डर सिद्ध हुए। उनका चाचा भी उन्हें बहुत कष्ट देता था, चटाई में लपेट देता और नीचे से धुआँ देता था ताकि उन की साँस रुक जाए और फिर कहता था कि अब भी इस्लाम छोड़ेगा या नहीं ? परन्तु वह उन कष्टों को सहन करते तथा उत्तर में यही कहते कि सत्य को पहचान कर उस से इन्कार नहीं कर सकता।

हज़रत अबूज़र^{रज़ि.} ग़फ़ार क़बीले के एक सदस्य थे वहां उन्होंने सुना कि मक्का में किसी व्यक्ति ने खुदा की ओर से (नबी) होने का दावा किया है। वह जांच-पड़ताल के लिए मक्का आए तो मक्का वालों ने उन्हें बहकाया और कहा कि मुहम्मद (स.अ.व.) तो हमारा संबंधी है। हम जानते हैं कि उसने एक दूकान खोली है, परन्तु अबूज़र^{रज़ि.} अपने इरादे से न रुके और कई उपाय करके अन्ततः रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के पास जा पहुँचे। रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने इस्लाम की शिक्षा बताई और आप ईमान ले आए। आप ने रसूलुल्लाह (स.अ.व.) से आज्ञा ली कि यदि मैं कुछ समय तक अपनी जाति को अपने इस्लाम की सूचना न दूँ तो कुछ हानि तो नहीं ? आप^{स.} ने फ़रमाया कि यदि कुछ दिन चुप रहें तो कोई हानि नहीं। इस आज्ञा के साथ वह अपने क़बीले की ओर वापस चले और हृदय में निर्णय कर लिया कि कुछ समय तक परिस्थितियों को ठीक कर लूँगा तब अपने इस्लाम को प्रकट करूँगा। जब वह मक्का की गलियों में से गुज़र रहे थे तो उन्होंने देखा कि मक्का के सरदार इस्लाम के विरुद्ध गाली-गलौज कर रहे हैं। कुछ दिनों के लिए अपनी आस्था को गुप्त रखने का विचार उनके हृदय से उसी समय जाता रहा और उन्होंने सहसा उस समूह के समक्ष यह घोषणा की

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا

عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

अर्थात् मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह एक है उसका कोई भागीदार नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (स.अ.व.) उसके बन्दे और रसूल हैं।

विरोधियों की इस सभा में इस आवाज़ का उठना था कि सारे लोग उन्हें मारने के लिए उठ खड़े हुए और इतना मारा कि वह बेहोश होकर गिर पड़े, परन्तु अत्याचारियों ने फिर भी अपने हाथ न रोके और मारते ही चले गए। इतने में रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के चाचा अब्बास^{रज़ि.} जो उस समय तक मुसलमान नहीं हुए थे वहाँ आ गए और उन्होंने उन लोगों को समझाया कि अबूज़र के क़बीले में से हो कर तुम्हारे अनाज लाने वाले क़ाफ़िले आते हैं। यदि इसकी जाति को क्रोध आ गया तो मक्का भूखा मर जाएगा। इस पर उन लोगों ने उन्हें छोड़ा। अबू ज़र^{रज़ि.} ने एक दिन आराम किया और दूसरे दिन फिर उस सभा में जा पहुँचे। वहाँ तो रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के विरुद्ध बातें करना उनका नित्यकर्म था। जब यह काबे में गए तो फिर वही चर्चा जारी थी। इन्होंने फिर खड़े होकर अपनी एक खुदा की आस्था की घोषणा की और फिर उन लोगों ने इन्हें मारना-पीटना आरम्भ किया। इसी प्रकार तीन दिन होता रहा, तत्पश्चात् यह अपने क़बीले की ओर चले गए।

हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) पर अत्याचार

स्वयं रसूले करीम (स.अ.व.) का अस्तित्व भी सुरक्षित न था। आपको नाना प्रकार से कष्ट दिया जाता। एक बार आप इबादत कर रहे थे कि लोगों ने आप के गले में कपड़ा डाल कर खींचना आरम्भ किया यहां तक कि आपकी आँखें बाहर निकल आईं। इतने में हज़रत अबू बक्रर^{रज़ि.} वहां आ गए और उन्होंने आपको यह कहते हुए छोड़ा कि हे लोगो ! क्या तुम एक मनुष्य की इस अपराध में हत्या करते हो कि वह कहता है कि खुदा मेरा स्वामी है।^①

एक बार आप नमाज़ पढ़ रहे थे कि आप की पीठ पर ऊँट की ओझड़ी लाकर रख दी, उसके बोझ से आप^{स.} उस समय तक सर न उठा सके जब तक कि कुछ लोगों ने पहुँच कर उस ओझड़ी को आप की पीठ से हटाया नहीं।^②

एक बार आप बाज़ार से गुज़र रहे थे कि मक्का के आवारा लोगों का एक समूह आप के चारों ओर हो गया और रास्ते भर आपकी गर्दन पर थप्पड़ मारता चला गया कि लोगो ! यह वह व्यक्ति है जो कहता है कि मैं नबी हूँ।

आप के घर में आस-पास के घरों से निरन्तर पत्थर फेंके जाते थे। रसोई घर में गन्दी वस्तुएँ फेंकी जाती थीं, जिनमें बकरों और ऊँटों की आँतें भी सम्मिलित होती थीं। जब आप नमाज़ पढ़ते तो आप के ऊपर मिट्टी और धूल डाली जाती, यहां तक विवश हो कर आप को चट्टान में निकले हुए एक पत्थर के नीचे छुप कर नमाज़ पढ़ना पड़ती थी, परन्तु ये अत्याचार और जुल्म व्यर्थ नहीं जा रहे। सुशील स्वभाव के लोग इनको देखते तथा उनके हृदय इस्लाम की ओर खिंचे चले जाते थे। एक दिन रसूलुल्लाह (स.अ.व.) का'बा के निकट 'सफ़ा' पहाड़ी पर बैठे हुए थे कि वहां से आप का सब से बड़ा शत्रु और मक्का का सरदार अबूजहल गुज़रा तो उसने आपको गालियां देना आरम्भ किया। आप उसकी गालियां सुनते रहे और कोई उत्तर न दिया और ख़ामोशी से उठकर अपने घर चले गए। आप के परिवार की एक दासी इस घटना को देख रही थी। सायंकाल के समय आप के चाचा हम्ज़ा^{रज़ि.} ने जो एक नितान्त निर्भीक और बहादुर व्यक्ति थे, जिनकी बहादुरी के कारण शहर के लोग उन से भयभीत थे, शिकार खेल कर जंगल से वापस आए तथा कंधे के साथ धनुष लटकाए हुए अकड़ और अभिमान के साथ घर में प्रवेश किया। दासी का हृदय प्रातः के दृश्य से नितान्त दुखी था वह हम्ज़ा^{रज़ि.} को इस रूप में देख कर सहन न कर सकी और उन पर व्यंग करते हुए कहा कि तुम बड़े बहादुर बने फिरते हो, हर समय शस्त्र धारण किए रहते हो, परन्तु क्या तुम्हें ज्ञात है कि प्रातः अबू जहल ने तुम्हारे भतीजे से क्या किया। हम्ज़ा^{रज़ि.} ने पूछा क्या किया ? उसने वह पूर्ण घटना हम्ज़ा^{रज़ि.} के सामने वर्णन कर दी। हम्ज़ा^{रज़ि.} यद्यपि

मुसलमान न थे परन्तु हृदय में शालीनता थी। इस्लाम की बातें तो सुनी हुई थीं और निश्चित ही उन के हृदय पर उनका प्रभाव भी हो चुका था परन्तु अपने स्वतंत्र जीवन के कारण गंभीरता के साथ उन पर विचार करने का उन्हें अवसर प्राप्त नहीं हुआ था, परन्तु इस घटना को सुन कर उनका स्वाभिमान उत्तेजित हो उठा। आँखों से अज्ञानता का पर्दा दूर हो गया और उन्हें ऐसा महसूस हुआ कि एक बहुमूल्य वस्तु हाथों से निकली जा रही है। उसी समय घर से बाहर आए और का'बे की ओर गए जो सरदारों की सभा का विशेष स्थान था, अपना धनुष कंधे से उतारा और ज़ोर से अबूजहल के मारा और कहा— सुनो मैं भी मुहम्मद (स.अ.व.) का धर्म स्वीकार करता हूँ। तुम ने प्रातः उसे अकारण गालियां दीं। इसीलिए कि वह आगे से उत्तर नहीं देता। यदि बहादुर हो तो अब मेरी मार का उत्तर दो। यह घटना इतनी अप्रत्याशित थी कि अबू जहल भी घबरा गया, उस के साथी हम्ज़ा से लड़ने को उठे परन्तु हम्ज़ा की बहादुरी का विचार और उन के शक्तिशाली शरीर पर दृष्टि डाल कर अबू जहल ने विचार किया कि यदि लड़ाई आरम्भ हो गई तो इसका परिणाम भयानक निकलेगा। अतः नीति से काम लेते हुए अपने साथियों को यह कह कर रोक दिया कि चलो जाने दो। मैंने वास्तव में इस के भतीजे को बहुत बुरी तरह से गालियां दी थीं।^①

इस्लाम का सन्देश

जब विरोध ने विकराल रूप धारण कर लिया और इधर रसूले करीम (स.अ.व.) और आप के सहाबा^{रज़ि.} (साथियों) ने हर हाल में मक्का वालों को खुदा तआला का यह सन्देश पहुँचाना आरम्भ किया संसार का स्रष्टा (खुदा) एक है उस के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं। जितने नबी गुज़रे हैं सब एकेश्वरवाद की आस्था रखते थे और अपनी जाति के लोगों को भी इसी शिक्षा पर आचरण करने का आदेश देते थे और उन्हें कहते थे कि तुम एक खुदा पर ईमान लाओ, इन पत्थर की मूर्तियों को छोड़ दो कि यह बिल्कुल व्यर्थ हैं, इनमें कोई शक्ति नहीं। हे मक्का वालो ! क्या तुम देखते नहीं कि इनके सामने जो भेंट और उपहार रखे जाते हैं यदि उन पर मक्खियों का झुण्ड आ बैठे तो वे मूर्तियां उन मक्खियों को उड़ाने की भी शक्ति नहीं रखतीं, यदि कोई उन पर प्रहार करे तो वे अपनी रक्षा नहीं कर सकतीं, यदि कोई उन से प्रश्न करे तो वे कोई उत्तर नहीं दे सकतीं, यदि कोई उनसे सहायता मांगे तो वे उसकी सहायता नहीं कर सकतीं, परन्तु एक खुदा तो मांगने वालों की आवश्यकता की पूर्ति करता है, प्रश्न करने वालों को उत्तर देता है, सहायता मांगने वालों की सहायता करता है और अपने शत्रुओं को परास्त करता है तथा अपने उपासकों को उच्चस्तरीय उन्नति प्रदान करता है, उससे ज्ञान का प्रकाश आता है जो उसके उपासकों के हृदयों को प्रकाशित कर देता है फिर तुम क्यों ऐसे खुदा को छोड़ कर निष्प्राण मूर्तियों के आगे नतमस्तक होते हो तथा अपनी आयु नष्ट कर रहे हो? तुम देखते नहीं कि खुदा तआला के एकेश्वरवाद को त्याग कर तुम्हारे विचार और तुम्हारे हृदय भी अपविल हो गए हैं। तुम भांति-भांति की भ्रामक शिक्षाओं में ग्रस्त हो, वैध और अवैध (हलाल और हराम) में अन्तर करने का विवेक नहीं रहा, अच्छे और बुरे के भेद को पहचान नहीं सकते, अपनी माताओं का अपमान करते हो, अपनी बहनों और बेटियों पर अत्याचार करते हो, उन के अधिकारों का हनन करते हो, अपनी पत्नियों से तुम्हारा व्यवहार सर्वथा अनुचित है, अनाथों का अधिकार छीनते हो, विधवाओं से दुर्व्यवहार करते हो, गरीबों और असहायों पर अन्याय करते हो, दूसरों का अधिकार छीन कर अपना आधिपत्य स्थापित करना चाहते हो, झूठ और छल-कपट से तुम्हें लज्जा नहीं, चोरी और लूटमार से तुम्हें घृणा नहीं, जुआ और मदिरा तुम्हारा धंधा है, ज्ञान-प्राप्ति और जन-सेवा की ओर तुम्हारा ध्यान नहीं। एक खुदा की ओर

से कब तक विमुख रहोगे? आओ ! और अपना सुधार करो तथा अत्याचार त्याग दो, प्रत्येक हक़दार को उसका हक़ दो। खुदा ने यदि माल दिया है तो देश और जाति की सेवा तथा असहायों और गरीबों के उत्थान के लिए उसे खर्च करो, स्त्रियों का सम्मान करो तथा उनके अधिकारों को अदा करो, अनाथों को खुदा तआला की अमानत समझो तथा उनकी देखभाल को महान कल्याण समझो, विधवाओं का आश्रय बनो, शुभकर्मों और संयम को जीवन का आभूषण बनाओ न्याय और इन्साफ़ ही नहीं अपितु दया और उपकार को अपना आचरण बनाओ। तुम्हारा इस संसार में आना व्यर्थ नहीं जाना चाहिए, अपने पीछे अच्छे आदर्श छोड़ो ताकि शाश्वत नेकी का बीजारोपण हो, अधिकार प्राप्ति, प्राप्ति में नहीं अपितु तप-त्याग और अपरिग्रह में वास्तविक सम्मान है।

अतः तुम कुर्बानी करो, खुदा की निकटता प्राप्त करो, परहिताय त्याग का आदर्श प्रस्तुत करो ताकि खुदा तआला के यहाँ तुम्हारे स्वत्व की रक्षा हो। निःसंदेह हम दुर्बल हैं, परन्तु हमारी दुर्बलता को न देखो। खुदा के दरबार में सत्य के राज्य की स्थापना का निर्णय हो चुका है। अब मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के द्वारा इन्साफ़ का तराजू रखा जाएगा तथा न्याय और दया के शासन की स्थापना की जाएगी। जिसमें किसी पर अन्याय न होगा, धर्म के संबंध में हस्तक्षेप नहीं किया जाएगा, स्त्रियों और दासों पर जो अत्याचार होते रहे हैं वे मिटा दिए जाएँगे तथा शैतानी शासन के स्थान पर एक खुदा का शासन होगा।

ड्राइवर पद के लिए घोषणा

सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान

शर्तें

- (1) उम्मीदवार की आयु 18 वर्ष से अधिक और 40 वर्ष से कम हो।
- (2) उम्मीदवार कम से कम दसवीं पास हो।
- (3) उम्मीदवार के पास चार पहिया वाहन चलाने का वैध लाइसेंस होना अनिवार्य है।
- (4) उम्मीदवार के लिए आवश्यक होगा कि उसके पास किसी सरकारी या निजी संस्था में ड्राइविंग का कम से कम 2 वर्ष का अनुभव हो। साथ ही अपनी आवेदन-पत्र के साथ उस संस्था का अनुभव प्रमाण-पत्र (एक्सपीरियंस सर्टिफिकेट) प्रस्तुत करना भी अनिवार्य है, जहाँ से उम्मीदवार ने अनुभव प्राप्त किया है।
- (5) उम्मीदवार के लिए अपना जन्म प्रमाण-पत्र जमा करना आवश्यक है।
- (6) उम्मीदवार के लिए लिखित परीक्षा और साक्षात्कार में सफल होना अनिवार्य होगा।
- (7) लिखित परीक्षा और साक्षात्कार में सफल होने वाले उम्मीदवारों का ड्राइविंग परीक्षण भी लिया जाएगा।
- (8) उम्मीदवार के लिए आवश्यक होगा कि वह नूर अस्पताल क़ादियान से प्राप्त चिकित्सकीय फिटनेस प्रमाण-पत्र के अनुसार स्वस्थ और तंदुरुस्त हो।
- (9) उम्मीदवार ड्राइवर को नियुक्ति के बाद द्वितीय श्रेणी के बराबर भत्ता और अन्य सुविधाएँ दी जाएँगी।
- (10) चयन होने की स्थिति में उम्मीदवारों को क़ादियान में प्रारंभिक पाँच वर्षों तक अपने निवास की व्यवस्था स्वयं करनी होगी।
- (11) उम्मीदवार के आने-जाने का यात्रा खर्च स्वयं वहन करना होगा।

नोट: लिखित परीक्षा, साक्षात्कार तथा ड्राइविंग परीक्षण की तिथि की सूचना उम्मीदवारों को बाद में दी जाएगी।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:

नज़ारत दीवान, सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान पिन कोड: 143516

मोबाइल: 09682627592, 09888232530

कार्यालय: 501130-01872

ई-मेल: diwan@qadian.in

पृष्ठ 1 का शेष

धार्मिक कार्यों में भाग लेने वाली हो और बच्चों की अच्छी परवरिश करने वाली हो, तो पुरुष इमाम होगा और पत्नी उसके पीछे चलने वाली होगी। इसी प्रकार यदि मां अपनी संतान की उच्च परवरिश करे तो वह इमाम होगी और संतान उसके अनुयायी होंगे, और संतान के अच्छे कर्म भी उसी की ओर जोड़े जाएँगे।

स्त्री कब्र में सो रही होगी, लेकिन जब उसके बच्चे सुबह की नमाज़ पढ़ेंगे तो फ़रिश्ते लिख रहे होंगे कि इस स्त्री ने सुबह की नमाज़ पढ़ी। इसी प्रकार यदि उसने अपनी संतान को तहज्जुद की आदत डाली होगी तो फ़रिश्ते लिख रहे होंगे कि उसने तहज्जुद की नमाज़ पढ़ी। यही स्थिति पुरुषों की भी है—वे जितने लोगों के मार्गदर्शन का कारण बनें, उन सबके नेक कर्मों के सवाब में वे भी सहभागी होंगे। इस प्रकार वे इमाम होंगे और दूसरे लोग उनके अनुयायी होंगे।”

(तफ़सीर कबीर, भाग 4, पृष्ठ 323 से 324, मुद्रित क़ादियान, 2010)

दारुस्सनात क़ादियान

(Ahmadiyya Vocational Training Centre)

में वर्ष 2026-2027 के प्रवेश लिए दाख़िला शुरू है

दारुस्सनात क़ादियान का आरंभ हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ की मंज़ूरी और विशेष राहनुमाई से 2010 ई. में हुआ। विभाग का विशेष उद्देश्य अहमदी विद्यार्थियों को हुनर-मंद बनाना और टेकनीकल कोर्स विशेषता रोज़गार के अवसर पैदा करना है। दारुस्सनात क़ादियान सरकारी विभाग NSIC दिल्ली और ISO रजिस्टर्ड है। जिसमें एक वर्ष के निम्नलिखित कोर्स करवाए जाते हैं।

Plumbing

Electrician

Welding

Motor Vehicle

AC & Refrigerator

Diesel Mechanic

Computer Applications

क़ादियान के बाहर से आने वाले अहमदी विद्यार्थियों के लिए hostel और mess का इंतज़ाम उपलब्ध है। रहने और food की कोई फ़्रीस नहीं है। केवल कोर्स की बोर्ड फ़्रीस आसान किस्तों में ली जाती है। ऐसे अहमदी नौजवान जो अपने स्कूल की शिक्षा पूर्ण नहीं कर सके या 8th और 10th के बाद टेकनीकल कोर्स करने के ख़ाहिशमंद हों प्रवेश के लिए जल्द संपर्क करें। अहमदी बच्चों की दीनी शिक्षा का भी इंतज़ाम मौजूद है। इसके अतिरिक्त रोज़ाना English Speaking और Personality Development की क्लास भी ली जाती है। नए सेशन 2026 -2027 के लिए दाख़िला शुरू हो गया है। जिसकी क्लासिज़ 16 जुलाई से शुरू होंगी।

अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित नम्बरज़ Email Id पर संपर्क कर सकते हैं।

darulsanaat.qadian@gmail.com

9872725895, 8077546198

(प्रिंसिपल दारुस्सनात क़ादियान)



EDITOR SHAIKH MUJAHID AHMAD Editor : +91-9915379255 e-mail : badarqadian@gmail.com www.akhbarbadr.in	REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553	Act. MANAGER : ATHAR AHMAD SHAMIM Mobile : +91-9815639670 e-mail: managerbadrqnd@gmail.com www.alislam.org/badr
	Weekly BADAR Qadian Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA POSTAL REG. No.GDP 45/ 2026-2028 Vol. 11 Thursday 26 March 2026 Issue No. 13	

सीरतुल-महदी

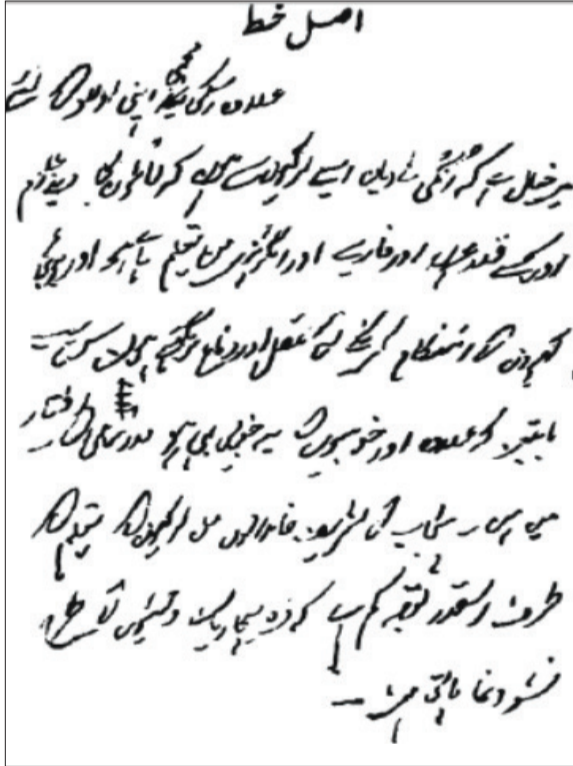
(लेखक: हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए. रज़ियल्लाहु अन्हु)

बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम ।

खाकसार निवेदन करता है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अंतिम समय में लेखन का कार्य टेढ़ी निब से किया करते थे और बिना लाइनों वाला सादा कागज़ इस्तेमाल करते थे। आपकी आदत थी कि कागज़ लेकर उसके दोनों किनारों पर मोड़ (शिकन) डाल लेते थे, ताकि दोनों ओर खाली हाशिया रहे। आप काली स्याही से भी लिख लेते थे और नीली-काली स्याही से भी। और मिट्टी का एक उपला-सा बनवाकर उसमें अपनी दवात रखवा लेते थे ताकि गिरने का खतरा न रहे।

आप सामान्यतः लिखते हुए टहलते भी जाते थे, यानी चलते भी रहते और लिखते भी रहते, और दवात को एक जगह रख देते थे। जब उसके पास से गुजरते तो निब को उसमें डुबो लेते। और लिखने के साथ-साथ अपनी लिखी हुई बात को पढ़ते भी जाते थे। आपकी आदत थी कि जब आप स्वयं पढ़ते थे तो आपके होंठों से गुनगुनाने की आवाज़ आती थी और सुनने वाला शब्दों को साफ़ समझ नहीं सकता था।

खाकसार ने मिर्ज़ा सुल्तान अहमद साहब को पढ़ते हुए सुना है। उनका तरीका हज़रत साहब के तरीके से बहुत मिलता-जुलता है। आपकी लिखावट पक्की होती थी, लेकिन टूटी-फूटी (शिकस्ता) भी होती थी, जिसे जिसकी आदत न हो, वह आसानी से साफ़ नहीं पढ़ सकता था। आप लिखे हुए को काटकर बदल भी देते थे। अतः आपकी लिखावट में कई स्थानों पर कटे हुए हिस्से दिखाई देते थे। और आपकी लिखावट बहुत बारीक होती थी। इसका नमूना निम्नलिखित है।



नक़ल खत

इसके अतिरिक्त मुझे अपनी संतान के लिए यह विचार है कि उनकी शादियाँ ऐसी लड़कियों से हों जिन्होंने धार्मिक शिक्षा प्राप्त की हो और कुछ हद तक अरबी, फ़ारसी और अंग्रेज़ी भी पढ़ी हो, और बड़े घरों का प्रबंध करने की समझ और बुद्धि रखती हों। अतः यह सभी बातें — अन्य गुणों के अतिरिक्त — यह गुण भी हों। यह सब कुछ खुदा तआला के अधिकार में है। पंजाब के सम्मानित परिवारों में लड़कियों की शिक्षा की ओर इतनी कम ध्यान दिया जाता है कि वे बेचारियाँ असभ्य लोगों की तरह पलती-बढ़ती हैं।

खाकसार निवेदन करता है कि यह अंश एक पत्र से लिया गया है, जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने 1899 ई० में मिर्ज़ा महमूद बेग साहब पट्टी को लिखा था।

{24}

बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम ।

मुझे हज़रत वालिदा साहिबा ने बयान किया कि जब तुम्हारे ताया (मिर्ज़ा गुलाम क़ादिर साहब, अर्थात् हज़रत साहब के बड़े भाई) निःसंतान देहांत कर गए, तो तुम्हारी ताई हज़रत साहब के पास रोती हुई आई और कहा कि अपने भाई की संपत्ति सुल्तान अहमद के नाम गोद लिए हुए पुत्र (मतबन्ना) के रूप में दर्ज करवा दें। वह वैसे भी अब आपकी ही है और इस प्रकार भी आपकी ही रहेगी।

अतः हज़रत साहब ने तुम्हारे ताया की सारी संपत्ति मिर्ज़ा सुल्तान अहमद के नाम कर दी। खाकसार ने वालिदा साहिबा से पूछा कि हज़रत साहब ने गोद लिए हुए पुत्र (मतबन्ना) की स्थिति को किस प्रकार स्वीकार कर लिया? वालिदा साहिबा ने कहा कि यह तो केवल एक औपचारिक बात थी, अन्यथा देहांत के बाद गोद लेना कैसा? वास्तविक उद्देश्य तो यह था कि तुम्हारी ताई की प्रसन्नता के लिए हज़रत ने तुम्हारे ताया की संपत्ति मिर्ज़ा सुल्तान अहमद के नाम दर्ज करवा दी और अपने नाम नहीं करवाई।

क्योंकि उस समय की परिस्थितियों के अनुसार हज़रत साहब समझते थे कि वैसे भी मिर्ज़ा सुल्तान अहमद को आपकी संपत्ति में से आधा हिस्सा मिलना है और बाकी आधा मिर्ज़ा फ़ज़ल अहमद को। अतः आपने समझ लिया कि मानो आपने अपने जीवन में ही मिर्ज़ा सुल्तान अहमद का हिस्सा अलग कर दिया।

(बाक़ी आगे)

(सीरतुल महदी, भाग प्रथम, पृष्ठ 18 से 20, प्रकाशित क़ादियान)

नज़ारत नश्र-व-इशाअत की ओर से प्रकाशित होने वाली पुस्तक का परिचय

ख़िलाफ़त का महत्त्व तथा इसके लाभ

यह पुस्तक 2008 ई. में ख़िलाफ़त के 100 वर्ष पूरे होने के अवसर पर लिखी गई थी, इस पुस्तक की यह विशेषता है कि लेखक ने इस में ख़िलाफ़त से जुड़े हर पहलू को बहुत अच्छी तरह से वर्णन किया है। आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद जो ख़िलाफ़त चली (अर्थात् ख़िलाफ़त ए राशिदा) के दौर का भी संक्षेप में वर्णन किया है फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आप के बाद जो ख़िलाफ़त ए अहमदिया का निज़ाम जारी हुआ उसका बहुत विस्तार से और सुंदर शैली में वर्णन किया है। सभी ख़लीफ़ाओं की जीवनी और उनके दौर में होने वाली जमात की उन्नति का वर्णन किया गया है। हर ख़लीफ़ा के दौर में जो जमाती उन्नति हुई, घटनाएं घटीं, मस्जिदें बनीं, जो स्कीम लागू हुईं, कबूलियत ए दुआ के लिए वृतांत इत्यादि का उल्लेख किया गया है। ख़िलाफ़त के बारे में इतने विस्तार से लिखी यह पहली पुस्तक है जो पाठकों को बहुत लाभदायक सिद्ध हो सकती है।

★ ★ ★